केन्द्रीय रेशम बोर्ड के कार्यकलाप
एवं
भारतीय रेशम उद्योग का निष्पादन

(01 जनवरी, 2018 के अनुसार)

केन्द्रीय रेशम बोर्ड

(वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार)

बेंगलूरु-560068

केन्द्रीय रेशम बोर्ड के कार्य तथा रेशमउत्पादन पर टिप्पणी

क. केन्द्रीय रेशम बोर्ड के कार्य :

केन्द्रीय रेशम बोर्ड (केरेबो), संसद के एक अधिनियम (1948 का अधिनियम सं. 61) द्वारा 1948 में स्थापित सांविधिक निकाय है । यह वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार के नियंत्रणाधीन कार्यरत है जिसका मुख्यालय बेंगलूरु में है। बोर्ड में कुल 39 सदस्य होते हैं जिनकी नियुक्ति केरेबो अधिनियम, 1948 की धारा-4 की उप-धारा 3 द्वारा प्रदत्त शक्तियों और प्रावधानों के अनुसार, 3 वर्ष की अवधि तक के लिए की जाती है । बोर्ड के अध्यक्ष की नियुक्ति केन्द्रीय सरकार द्वारा की जाती है और दो पदधारियों को केन्द्रीय सरकार द्वारा नामित किया जाता है जिनमें से एक उपाध्यक्ष के रूप में वस्त्र मंत्रालय के रेशम प्रभाग के प्रधान होते हैं तथा एक बोर्ड के सचिव, दोनों सरकार के संयुक्त सचिव की श्रेणी से कम नहीं होते ।

विभिन्न राज्यों में रेशम उत्पादन विकास कार्यक्रमों के समन्वयन तथा निर्यात के लिए रेशम सामग्री के लदान-पूर्व करने हेतु केन्द्रीय रेशम बोर्ड ने नई दिल्ली, मुम्बई, कोलकता, जम्मू, हैदराबाद, चेन्नै, भुवनेश्वर, गुवाहाटी, लखनऊ, पटना में 10 क्षेत्रीय कार्यालय तथा बेंगलूरु, वाराणसी व श्रीनगर में 3 प्रमाणन केन्द्र स्थापित किए हैं । केरेबो के क्षेत्रीय कार्यालय प्रौद्योगिकी के स्थानान्तरण के समन्वय के लिए राज्य के रेशम उत्पादन विभागों, क्षेत्र इकाईयों तथा केरेबो क्षेत्र कार्यकर्ताओं के साथ निकट सम्पर्क रखते हैं । क्षेत्रीय कार्यालय, केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा गठित राज्य स्तरीय रेशम उत्पादन समन्वय समिति की बैठकों के संयोजक भी हैं । 01.01.2018 को यथा विद्यमान केरेबो के कर्मचारियों की संख्या 2,994 है।

केरेबो के अधिदेशित कार्यकलापों में अनुसंधान व विकास, चार स्तर के रेशमकीट बीज उत्पादन के नेटवर्क का रखरखाव, वाणिज्यिक रेशमकीट बीज उत्पादन में अगुवाई भूमिका, विभिन्न उत्पादन प्रक्रियाओं में गुणवत्ता मापदण्डों को लागू करना तथा रेशम उत्पादन एवं रेशम उद्योग से संबंधित सभी विषयों पर सरकार को सलाह देना है । केन्द्रीय रेशम बोर्ड के इन अधिदेशित कार्यों को पूरा करने के लिए देश के विभिन्न राज्यों में स्थित 288 केरेबो एककों द्वारा केन्द्र-क्षेत्र की योजना नामत: **"रेशम उद्योग के विकास हेतु एकीकृत योजना"** के माध्यम से निम्न चार घटकों के साथ संचालित किया जाता है ।

1. अनुसंधान व विकास, प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तथा सूचना प्रौद्योगिकी पहल
2. बीज संगठन
3. समन्वयन तथा बाजार विकास
4. गुणवत्ता प्रमाणन प्रणाली, निर्यात, ब्राण्ड उन्नयन व प्रौद्योगिकी उन्नयन

1. अनुसंधान व विकास, प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तथा सूचना प्रौद्योगिकी पहल ।

केंद्रीय रेशम बोर्ड के प्रमुख अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, नए अभिगमों के माध्यम से रेशमउत्पादन के स्थायित्व हेतु उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी सहायता प्रदान करता है । मैसूर (कर्नाटक), बहरमपुर (पश्चिम बंगाल) और पाम्पोर (जम्मू व कश्मीर) स्थित प्रमुख संस्थान शहतूती रेशम उत्पादन के कार्य करते हैं; जबकि राँची (झारखंड) तसर का और लाहदोईगढ़ ,जोरहाट (असम) मूगा एवं एरी रेशम उत्पादन का कार्य करता है । शहतूती और वन्य रेशम उत्पादन के क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र (क्षेरेअके/क्षेतअके/क्षेमूअके) क्षेत्रीय आवश्यकता के अनुसार अनुसंधान उपलब्धियों का प्रसार कर रहे हैं । इसके अतिरिक्त, शहतूती एवं वन्य रेशम के अनुसंधान विस्तार केन्द्र (अ वि के) एवं उनकी उप-इकायों का एक तंत्र रेशम उत्पादकों को प्रसार सहायता प्रदान करने का भी

कार्य करता है । कोसोत्तर क्षेत्र में अनुसंधान व विकास समर्थन प्रदान करने के लिए, बोर्ड ने बेंगलूरु में एक केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान (केरेप्रौअसं) स्थापित किया है । इसके अतिरिक्त, केन्द्रीय रेशम बोर्ड ने बेंगलूरु (कर्नाटक) में रेशमकीट बीज प्रौद्योगिक प्रयोगशाला (रेबीप्रौप्र), होसूर (तमिलनाडु) में केन्द्रीय रेशम जननद्रव्य संसाधन केन्द्र (केरेजसंके) और बेंगलूरु में रेशम जैव-प्रौद्योगिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (रेजैप्रौअप्र) भी स्थापित किया है ।

वर्ष 2017-18 के दौरान दिसंबर, 2017 के अंत तक केरेबो के विभिन्न अनुसंधान व विकास संस्थानों द्वारा कुल 32 नई अनुसंधान परियोजनाएं प्रारंभ की गईं तथा 17 परियोजनाएँ समाप्त की गईं एवं वर्तमान में कुल 150 अनुसंधान परियोजनाएं अर्थात् शहतूती क्षेत्र में 92, वन्य क्षेत्र में 41 और कोसोत्तर क्षेत्र में 17 परियोजनाएं प्रगति पर हैं ।

अनुसंधान व विकास (अनुसंधान कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण)

(i) परपोषी पौधा (शहतूत) पर अनुसंधान व विकास :

- शहतूत के लिए अखिल भारतीय समन्वित प्रयोगात्मक परीक्षण (एआईसीईएम) के तृतीय चरण को तैयार किया गया है । दक्षिण के लिए जी4, पूर्व और उत्तरी क्षेत्रों के लिए सी 2038 और पहाड़ी इलाकों के लिए टीआर-23, वाणिज्यिक उपयोग के लिए पहचान की गई है ।
- अखिल भारतीय समन्वित प्रयोगात्मक परीक्षण के अगले चरण में परीक्षण के लिए तीन नयी शहतूत प्रजाति जैसे एजीबी-8, पीपीआर-1, गंगा को सूचीबद्ध किया गया है ।
- पूर्वी भारत में मोडरेट टिलेज के अधीन दक्षिण भारत में शहतूत में कार्बन सेकस्ट्रेशन दर 873 किग्रा./हे/वर्ष पाया गया और समान अध्ययन दक्षिण भारत में प्रगति पर है ।
- पर्ण रोलर के लिए जाल विकसित करने के लिए दो फेरोमोन मिश्रण पहचाने गए। पहचाने गए फेरोमोन मिश्रण का ईस्टेरिफिकेशन जेड.ई-7,11-हेक्साडिसिनेल एसिटेट की उपस्थिति व्यक्त करता है । अभी फेरोमोन मिश्रण के ईएजी और सिन्थेसिस प्रगति पर है ।
- 88-94% रोग दमन की प्रभावकारिता के साथ मूल गांठ रोग के सापेक्ष एक नया सूत्रीकरण "रॉट फिक्स" विकसित किया गया ।
- पूर्ण मात्रा(17.31 किग्रा./प्लॅट) के अधीन नियंत्रण प्रजाति एस-1635 सी-5 के सापेक्ष प्रजाति सी-5 उत्कृष्ट पाया गया और पश्चिम बंगाल में उर्वरक की खुराक कम हो गई(12.58 किग्रा./प्लॉट) ।
- नाइट्रोजन रिडक्टेज और चाल्कोने सिंथेस जीन के लिए प्राइमरों के साथ बढ़ने के लिए 110 संततियों से डीएननए निकाले गए ।
- पश्चिम बंगाल में सिंचित अवस्था के अधीन विशाला की पर्ण उपज नियंत्रण (एस- 1635) 9150 किग्रा/हेक्टेयर/फसल से 12.21% अधिक रहा अर्थात् 10267 किलोग्राम/हेक्टेयर/फसल ।
- मृदा स्वास्थ्य कार्ड को जारी करने के लिए 4388 मृदा के नमूने एकत्र किए गए और इसका विश्लेषण किया जा रहा है ।
- उच्च पत्ती उपज नामत: सी- 108 (15.4 मी.ट.) सी- 384 (9.7 मी.ट.) और सी-212 (9.2 मी.ट.) के साथ कम तापमान तनाव सहिष्णु शहतूत जीनप्ररूप को पहचान की गई ।
- सी-2028, जलाक्रांत सहिष्णु शहतूत प्रजाति को पश्चिम बंगाल, असम और अन्य पूर्वी और पूर्वोत्तर राज्यों में लोकप्रिय किया जा रहा है ।
- पर-स्थाने क्षेत्र जीन बैंक में 1291 शहतूत जननद्रव्य अभिगमों को संरक्षित किया जा रहा है ।

- उत्कृष्ट शहतूत जीन प्ररूप को पहचानने के लिए 55 शहतूत अभिगमों के प्रारंभिक बल, प्रकाश संश्लेषक दर, स्टोमेटल कण्डक्टेन्स और स्वेद दर का अध्ययन व्यापक तापमान और ऊँचा तापमान (45°) तथा सी ओ2 (500 पीपीएम) के अधीन किया गया ।
- पूर्वी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों के विभिन्न कृषि जलवायु में शहतूत पीड़कों के प्रभावी प्रबंधन के लिए एक शहतूत पीड़क जीव आपतन की कार्यक्रम सारणी विकसित की गई ।
- "नीमाहारी" एक जैव-सूत्रकृमिनाशी के क्षेत्र मूल्यांकन से उन्नत पर्ण उपज (15-18%) के साथ 80% मूल गाँठ रोग में कमी आयी ।
- पश्चिम बंगाल के प्रमुख रेशम उत्पादक जिलों में शहतूत क्षेत्रों के बेहतर प्रबंधन के लिए भौगोलिक स्थानिक तकनीक का उपयोग करते हुए मूल्य निर्धारण किया गया ।
- शीतोष्ण क्षेत्र के लिए शीत सहिष्णु शहतूत प्रजाति के विकास के लिए तीन ख्यात शीत सहिष्णु जीन को पहचान किया गया ।
- कश्मीर क्षेत्रों में जड़ विगलन रोगों के आपतन का सर्वेक्षण किया गया और हीलिकोबोसिडियम माम्पा और फ़्यूसरियम ऑक्सिफोरम के रूप में प्रेर जीव की पहचान की गई ।
- आंकड़े दर्शाए कि अधिकतम शहतूत पत्ती (150+90) सेमीx 60 सेमी में अधिकतम रिकार्ड की (13174.83 किग्रा/हे/फसल) और न्यूनतम पत्ती 270 सेमी x 60 सेमी (8842.17 किग्रा/हे/फसल) के साथ रिकार्ड की ।

अनुसंधान व विकास प्रयासों ने शहतूत उत्पादकता 2005-06 के 50 मीट/हे/वर्ष में 2017-18 के दौरान 60 मीट/हे/वर्ष तक सुधार करने में मदद की है ।

(ii) शहतूत रेशमकीट पर अनुसंधान व विकास :

- दो नया द्विप्रज संकर नामत: जी11xजी19 एवं बी कॉन1x बी कॉन 4 उत्तम उत्पादन और अनूकूलन के साथ प्राधिकरण परीक्षण के दूसरे वर्ष में है । जी11 x जी19 के कुल 5,01,285 रोमुच कृषकों को वितरित किए गए और 58 किग्रा/100 रोमुच के राष्ट्रीय औसत के सापेक्ष दक्षिण राज्यों में संकर 68.5 किग्रा/100 रोमुच के औसत उत्पाद अभिलिखित किया ।
- दो उन्नत संकर नस्ल, एल3xएस8 एचबी4xएस8 उच्च तापमान सहिष्णु और बीएमएनपीवी को . 90% कोशितीकरण दर, कवच (20-21%) तथा कच्चा रेशम (14-15%) के साथ विकसित किया गया, जिसका मूल्यांकन परीक्षण प्रगति पर है ।
- ताप-सहनशील युक्त एसएसआर मार्करों (एलएफएल 0329 व एलएफएल 1123) का उपयोग करते हुए चार ताप-सहनशील रेशमकीट वंशों को विकसित किया गया ।
- एनपीवी के प्रति सहनशील दो द्विप्रज संकर नामत: सीएसआर52एनx सीएसआर26एन; (सीएसआर52एनx58एन)x (सीएसआर16एनxसीएसआर26एन) को क्षेत्र में आगे परीक्षण के लिए सूचीबद्ध किया गया है ।
- दक्षिण भारत में बीज एवं वाणिज्यिक कीटपालन क्षेत्र में रोग आपतन के अनुश्रवण के लिए पाक्षिक सर्वेक्षण संचालित किया गया ।
- शुद्ध मैसूरु नस्ल के आठ वंशों का 15 पीढ़ी कीटपालन नस्ल के गुणात्मक सुधार के लिए किया गया ।
- बुलगेरिया और भारतीय पैतृकों से नए प्रजनन वंश (अंडाकार और डम्बबेल वंश) विकसित किया गया और एफ3 पीढ़ी पूरा किया गया।

- मूल विगलन तथा मूल गाँठ संक्रमण के प्रति कृत्रिम संरोपण अध्ययन के अंतर्गत विश्लेषण किए गए 32 संकरों में से छः संकर दोनों रोगों के प्रति सहनशीलता दर्शाए ।
- निष्पादन के आधार पर उच्च उत्पादकता तथा उन्नत रेशम गुणवत्ता के साथ दो संकर आईसीबी14xएन23 तथा आईसीबी 17xएस8 पहचाने गए ।
- उच्च उपज देने वाले रेशमकीट नस्ल विकसित करने के लिए पाँच शुद्ध नस्ल तथा दो संकर बुल्गोरिया से खरीदे गए और आगे चयन एवं उपयोग के लिए उनका विश्लेषण किया जा रहा है ।
- आरएनएआई तकनीक के माध्यम से विकसित एनपीवी प्रतिरोध ट्रांसजीनी रेशमकीट के साथ बहुस्थानीय परीक्षण दक्षिण, पूर्वी तथा उत्तर भारत में प्रगति के अधीन है । नियंत्रण की तुलना में ट्रांसजीनी रेशमकीट उच्च एनपीवी प्रतिरोध दर्शाया ।
- दक्षिण भारत के उच्च तापमान तथा आर्द्रता के क्षेत्रों के लिए उचित रेशमकीट संकरों को विकसित करने के लिए कुल 35 संकर संयोजन सूचीबद्ध कर विश्लेषण किया जा रहा है ।
- पूर्वी तथा उत्तरपूर्वी भारत के लिए सबसे बेहतर को सूचीबद्ध करने हेतु सामान्य तथा दवाब की स्थिति के अधीन उच्च तापमान तथा उच्च आर्द्रता सहिष्णु रेशमकीट के 25 संकरों का कीटपालन पूरा किया गया ।
- बी.कॉन1xबी.कॉन4 का प्राधिकरण परीक्षण 161500 रोमुच के साथ पूरा किया गया और पूर्वी भारत में 50.25 कि.ग्रा/100 रोमुच की औसत कोसा उपज रिकार्ड की गई ।
- 50-55 कि.ग्रा उपज/100 रोमुच के कोसा उपज संभाव्यता रखने वाले 1 नए द्विप्रज रेशमकीट संकर जेन-3x एसके6 तथा 45-50 कि.ग्रा उपज/100 रोमुच के बहुप्रज xद्विप्रज रेशमकीट संकर एम6 डीपीसी x (एसके6 xएसके7) का विकास पूर्वी क्षेत्र के लिए किया गया ।
- उत्तर तथा उत्तरपूर्वी क्षेत्र में शरद फसल के स्थिरीकरण के लिए सशक्त रेशमकीट नस्लों को विकसित करने के लिए प्रजनन प्रगति पर है ।
- पारजीनी रेशमकीट, निस्तरी से आरएनएआई प्रक्रिया इंट्रोग्रेस करते हुए सीएसआर4 तथा सीएसआर27 के एनपीबी प्रतिरोधी वंश विकसित किए गए । सीएसआर 4 तथा सीएसआर 27 के ये वंश एनपीवी के प्रति अधिक प्रतिरोध दर्शाए ।
- डीएनवी प्रतिरोधी जीन एनएसडी-2 की उपस्थिति या अनुपस्थिति के आधार पर तीन रेशमकीट संकर जैसे एपीएस-5, एपीएस-एसटीपी5 तथा बीबीई198, डीएनवी प्रतिरोध के रूप में पहचाने गए।
- पेब्रीन तथा एनपीवी के लिए पीसीआर आधारित शीघ्र पता लगाने की प्रणाली विकसित की गई ।
- विभिन्न कृषि जलवायु अवस्था में एनपीवी प्रतिरोध इंट्रोग्रेस के माध्यम से एनपीवी प्रतिरोध सीएसआर2 रेशमकीट के तीन वंशों (एमएएसएन-4,6 एवं7) का क्षेत्र मूल्यांकन प्रारंभ किया गया।
- पेब्रीन का पता लगाने के लिए लूप-मीडिएटेड आइसोथर्मल एम्लिफिकेशन (एलएएमपी), एक सरल तकनीक विकसित की गई और इसकी वैद्यता परीक्षणाधीन है ।
- उच्च तापमान और उच्च आर्द्रता की अवस्था के लिए सहिष्णु उपयुक्त प्रजनन संसाधान सामग्री की पहचान कर आधारभूत संकरों को तैयार किया गया, इसका आगामी प्रजनन कार्य प्रगति पर है।
- 473 रेशमकीट जननद्रव्य स्टॉक (81 बहुप्रज, 369 द्विप्रज तथा 23 उत्परिवर्ती) का रखरखाव अनूसूचित कीटपालन के माध्यम से किया जा रहा है ।
- धारण किए गए अंडों के विमोचन के लिए अण्डनिक्षेपण उत्तेजकों का उपयोग प्रगति पर है ।

❖ तमिलनाडु में द्विवप्रज रेशम कृषकों पर सीपीपी के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का अध्ययन किया गया ।

अनुसंधान व विकास प्रयासों से वर्ष 2005-06 के दौरान 48 कि.ग्रा./100 रोमुबीच से वर्ष 2017-18 के दौरान 60.3कि.ग्रा./100 रोमुच तक उपज में सुधार लाने में सहायता मिली है ।

(iii) वन्य रेशम पर अनुसंधान व विकास :

वन्य परपोषी पौधा

- ❖ तसर रेशमकीट पालन के लिए एक वैकल्पिक खाद्य पौधा *लेजरस्ट्रोमिआ स्पीसियोसा* को पहचाना गया, जो आसानी से जड़ पकड़ने वाला तथा तेजी से बढ़ने वाला है । कीटपालन निष्पादन को बैध करने के परीक्षण किए जा रहे हैं ।
- ❖ शीघ्र बढ़ने वाले, शुष्क सहिष्णु टर्मिनेलिया अर्जुना अभिगम के चयन के लिए 10 उच्च अभिगम (अभिगम सं. 102, 115, 123, 135, 424,507, 523, 525, 614 तथा 718) आगे जाँच के लिए चयनित किए गए ।
- ❖ पोधारोपण स्थान पर लघु पानी कैचमेंटस, वन्य लेगुमिनस पौध (मुकुना ब्राक्टीटा) और फोसफेट सोलुबिलाईजिंग बैक्टीरिया (पीएसबी) को शामिल करते हुए टेरमिनालिया पौधारोपण में मृदा के आर्द्र संरक्षण और पोषकतत्व की वृद्धि के लिए पैकेजन विकसित किया है । इस पैकेज के उपयोग से पर्ण उपज की औसत वृद्धि 49.51% तक रही ।
- ❖ पर्ण चित्ती रोग, पर्ण फफूंद तथा पर्ण किट्ट रोग प्रतिरोधी दो सोम अभिगमों (एस3 तथा एस6) को क्षेत्र में लोकप्रिय बनाया जा रहा है ।
- ❖ अरंडी कृषि के लिए एकीकृत पोषक प्रबंधन प्रणाली विकसित की गई है तथा यह क्षेत्र में परीक्षणाधीन है ।
- ❖ एरी रेशमकीट पालन के लिए *एलेन्थस ग्रान्डिस* (बरपत) को एरी रेशमकीट पालन के लिए सर्वोत्तम बहुवर्षी भोज्य पौधे के रूप में पहचाना गया और क्षेत्र में उपयोगार्थ संस्तुत किया है। यह केसेरु पौधे का पर्ण उपज 25मी.ट./हे/वर्ष की तुलना में 32 मी.ट./हे/वर्ष का पर्ण उपज रिकार्ड किया है ।
- ❖ झारखण्ड में साल पौधों के प्रभावी उपयोग तथा साल पर लारिया की उत्पादकता का उन्नयन करने के लिए भी पैकेज प्रणाली की अनुशंसा की गईं ।
- ❖ एरंडी और *एलिएन्थस ग्रैन्डीस* दोनों के पर्ण जैव रसायन में जैवरसायन विश्लेषण से समानता सिद्ध हुई ।
- ❖ पर्ण चित्ती रोग, पर्ण फफूंद तथा पर्ण किट्ट रोग प्रतिरोधी दो सोम अभिगमों (एस3 तथा एस6) को क्षेत्र में लोकप्रिय बनाया जा रहा है ।
- ❖ संक्रमित एरंडी पत्तियों से शुद्ध रूप में एलटरनारिया रिसिनी को पृथक किया गया । जैव आमापन अध्ययन में आइसोलेट रिजोबैक्टीरिया के एंटगोनिस्टिक एफिकसीसी का परीक्षण किया गया और आइसोलेट एलआरपी4 तथा एचएफ-3 परीक्षण रोगजनक का अधिकतम सहलग्नता दर्शाया ।

वन्य रेशमकीट

- ❖ तसर डाबा द्विवप्रज रेशमकीट 'बीडीआर-10' लोकप्रिय बनाया जा रहा है ।
- ❖ उच्च बहुप्रजता तसर रेशमकीट वंश, सीटीआर-14 के लिए बहुस्थानीय क्षेत्र परीक्षण पाँच स्थानों में संचालित किया गया । उत्पादन लक्षण नियंत्रण पर 20-22% लाभ अभिलिखित किया ।

- तसर रेशमकीट के दो प्रमुख वंश, डीटीएस एवं डीटी-12 को चयनित किया और इन वंशों के 38250 बीज कोसा संरक्षणाधीन है ।
- एरी रेशम कीट नस्ल 'सी2' को लोकप्रिय बनाया जा रहा है ।
- दो श्रेष्ठ मूगा रेशमकीट वंश सीएमआर-1 तथा सीएमआर-2 क्षेत्र के परीक्षणाधीन हैं ।
- समान अंड-प्रस्फुटन की सुविधा हेतु मूगा रेशमकीट अंड संरक्षण अनुसूची विकसित की गई है जो क्षेत्र परीक्षणाधीन है ।
- आंध्र प्रदेश की अद्‌र्ध-शुष्क स्थिति में एरी पारि-प्रजाति एसआर 025-का क्षेत्र परीक्षण प्रगति पर है।
- वन्य सेरिसिजीनी कीटों के लक्षण-वर्णन ,मूल्यांकन तथा वर्गीकरण के आधार पर ,एन्थेरिया फ्रिथी को उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के लिए भविष्य की भावी प्रजाति के रूप में चयनित किया गया है ।
- एरी रेशमकीट के छह आशाजनक प्रभेद अर्थात् वाईपी, वाईएस, वाईजेड, जीबीपी, जीबीएस एवं जीबीजेड बोरदुआर एवं टीटाबार पारिप्रजाति से शरीर चिह्न एवं रंग के आधार पर अलग किया गया । दो संयोजन अर्थात् वाईज़ेड×वाईएस तथा जीबीएस×जीबीजेड कीटपालन निष्पादन के आधार पर आशाजनक पाए गए । इन संयोजनों के एक का बीजागार परीक्षण पूरा किया गया ।
- मूगा और अन्य वन्य रेशम शलभ के जातियों के लिए स्वस्थाने संरक्षण कार्य उपूक्षेवसंयो कार्यक्रम के अधीन चार राज्यों अर्थात् असम, मेघालय, अरूणाचल प्रदेश एवं बीटीसी में किया जा रहा है ।
- मूगा रेशमकीट के पीडक एवं रोगों के विरूद्‌ध एक जैव मापांक विकसित किया गया ।
- स्वस्थ रेशमकीट से फील्लोप्लेन एवं आंत-जीवाणु का वर्णन किया गया ।
- 68 से 72 घंटे की उम्र के भ्रूण में भ्रूणीय विकास का सबसे लम्बा चरण पाया गया जो उपयुक्त अंडा संरक्षण अनुसूची विकसित करने में मदद करता है ।
- एन्थीरिया माईलिट्टा डी. में फ्लेचरी रोग से संबद्‌ध विषाणु एवं जीवाण्विक रोगजनकों को अलग किया गया और पहचान की गई ।
- मूगा पारि-प्रणाली में फ्लैचरी रोग के जीवाणु नियंत्रण हेतु एक नया रासायनिक संक्रमणहारी तैयार किया गया है तथा प्रयोगशाला दशा के अन्तर्गत इसका परीक्षण प्रगति पर है ।
- वाणिज्यिक उपयोग हेतु इसका पृथक्कीकरण और लक्षणवर्णन हेतु तसर रेशम तंतुओं से सेरिसिन के अलग किया गया । विभिन्न तंतु अवशेष में सेरिसिन की उपलब्धता लगभग1.8-2.5% है ।

लोकप्रियता हेतु अनुमोदित नए संकर/प्रजातियाँ:

संकर प्राधिकरण समिति द्‌वारा वाणिज्यिक उपयोग के लिए हाल में प्राधिकृत रेशमकीट संकर/नस्ल का क्षेत्र में प्रचार किया जा रहा है । उनमें महत्वपूर्ण हैं :

#	नयी नस्ल/प्रजाति	क्षेत्र
शहतूती क्षेत्र		
1	जी11x जी19	दक्षिण अंचल
2	एम वी 1x एस8	
3	बी.कॉन 1 x बी.कॉन 4	पूर्व एवं उत्तर पूर्व
4	एम6डीपी(सी)x(एसके6xएसके7)	
वन्य क्षेत्र		
5	सीटीआर-14	तसर संवर्धन के लिए उपयुक्त सभी क्षेत्र
6	सीएमआर-1	मूगा संवर्धन के लिए उपयुक्त सभी क्षेत्र
7	सीएमआर-2	

(iv) कोसोत्तर में अनुसंधान व विकास :

- श्रेष्ठ गुणवत्ता के आयात प्रतिस्थानी रेशम के उत्पादनार्थ देशी स्वचालित रेशम धागाकरण मशीन (एआरएम) का विकास व प्रदर्शन किया जा रहा है ।
- सौर ऊर्जा से चालित किफायती कताई मशीन का प्रदर्शन जिससे ग्रामीण क्षेत्र में सौर ऊर्जा का प्रयोग करते हुए चलाया जा सकता है ।
- कोसा धागाकरण में सुधार हेतु रीलीबूस्ट का विकास किया गया तथा यह प्रयोगशाला के परीक्षणाधीन है ।
- कण्वेयर तप्त वायु शष्कक का उपयोग करते हुए तसर कोसों के तप्त वायु सुखाने के लिए प्रौद्योगिकी विकसित की गई ।
- तसर रेशम धागाकरण हेतु किफायती आठ छोरों की बहुछोरीय धागाकरण मशीन को लोकप्रिय बनाया गया ।
- वन्य रेशम कोसोत्तर क्षेत्र में तसर तथा मूगा कोसों के लिए आर्द्र धागाकरण, तसर रेशम के लिए साइजिंग मशीन, तसर कोसों के लिए संशोधित शुष्क धागाकरण मशीन, रेशम धगाकरण जल के पुनर्चक्रण हेतु दाबकृत लच्छी बिगोंदन मशीन तथा उपकरण आदि को क्षेत्र में लोकप्रिय किया जा रहा है ।
- भुक्तशेष रेशमकीट प्यूपा से पेलेड पर्त हटाने के लिए पेलेट निष्कर्षण तथा प्यूपा पृथक्करण मशीन का प्रदर्शन ।
- विभिन्न किस्मों की चंदेरी साड़ी (रेशम×रेशम) का विकास किया गया ।
- "स्लग हटाने के लिए स्लग कैचर (पोर्शलीन बटन के बदलाव के रूप में) के इस्तेमाल" की विकसित प्रौद्योगिकी का क्षेत्र परीक्षण किया जा रहा है ।
- "केरेप्रौअसं पारि-विगोंदन मशीन" की प्रौद्योगिकी विकसित की गई और इसका क्षेत्र परीक्षण किया जा रहा है ।
- हैंक में रेशम सूत से सेरिसिन का एचटीएचपी निष्कर्षण का उपयोग करते हुए एरी कोसा विगोंदन प्रौद्योगिकी विकसित की गई और कम तापमान वाष्पीकरण, स्प्रे शुष्कन के माध्यम से विगोंदन शराब से सेरिसिन पुनप्राप्ति की गई और हिम शुष्कन को मानकीकृत किया गया।
- संस्थान द्वारा विकसित अर्ध्वस्थ धागाकरण मशीन को परिष्कृत किया गया और अधिक उत्पादकता के लिए 3 छोरीय मशीन तैयार की गई ।
- शहतूत, तसर, मूगा एवं एरी रेशम वस्त्रों को विकसित किया गया और फाइब्रॉइन मैट्रिक्स के साथ सुदृढ़ किया गया ।
- बिना बुने एरी रेशम वस्त्रों को सफल रूप से तैयार किया गया और चेहरे पर लगाने के लिए कांतिवर्द्धक कास्मेटिक के साथ संरूप के संसेचन का परीक्षण 'लोरियल' में प्रगति पर है ।
- सेरिसिन का लक्षण निर्धारण कर कांतिवर्द्धक कास्मेटिक (साबुन, शैम्पू, हेयरक्रीम आदि और टेलकॉम पाउडर में डालने के लिए) में उपयोग करने का कार्य चल रहा है ।
- नमी धागाकरण के लिए रैली तसर कोसों को पकाने के लिए प्रौद्योगिकी विकसित किया गया ।

- ❖ कोसा पकाने की एक नई युक्ति यथा ढाबा, रैली तथा मोदल कोसा हेतु बोरैक्स तथा सोडियम बाई कार्बोनेट के संयोजन का विकास किया गया तथा इसे तकनीकी-आर्थिकी रूप से 67% रेशम प्रतिपाप्राप्ति तथा 33% धागाकरण क्षमता के साथ व्यवहार्य पाया गया ।
- ❖ एक जैव परिष्करण को विकसित किया गया, जो तसर वस्त्रों के गुणधर्म में सौंदर्य और थार्मो कालिक आराम महत्वपूर्ण रूप में बढ़ाया ।
- ❖ रेशम के विविध सिलेसिलाए उत्पादन/पोशाकों का विकास किया गया ।

अनुसंधान व विकास प्रयासों से वर्ष 2005-06 के दौरान रेडिट्टा में 8.2 से 2016-17 के दौरान 7.3 तक सुधार लाने में सहायता मिली है ।

पेटेण्ट व वाणिज्यिकरण

1) 2016-17 के दौरान

क. पेटेण्ट प्राप्त :

1. स्वचालित तसर कोसा छंटाई वियोजक मशीन

ख. पेटेण्ट के लिए फाइल किया गया आवेदन :

1. ट्रे धुलाई सह रोगाणुनाशक मशीन
2. तसर आर्द्र धागाकरण मशीन
3. दो बॉबिन वाली आर्द्र लपेटन मशीन
4. रेली ब्रूस्ट का इस्तेमाल करते हुए कोसा धागाकरण क्षमता बढ़ाने की प्रक्रिया
5. मूल्य वर्धित उप-उत्पादों के उत्पादन हेतु क्षीण रेशम शलभ का उपयोग करने की प्रक्रिया

ग. प्रौद्योगिकियाँ/वाणिज्यीकृत उत्पाद

1. प्लास्टिक निपात चंद्रिके से रेशमकीट के कोसा फसल हेतु एक मशीन
2. अंकुश-एक पारि-अनुकूल रेशमकीट संकाय तथा कीटपालन पत्रक रोगाणुनाशी
3. पोषण-शहतूत में पोषक कमियों के सुधार हेतु एक बहुपोषक संरूप

2) 2017-18 के दौरान

क. पेटेण्ट प्राप्त :

1. अधिक रेशम उपज के लिए मूगा कोसों को पकाने हेतु रासायनिक सूत्रीकरण ।
2. जकार्ड के लिए न्यूमेटिक लिफ्टिंग मेकनिसम के लिए उन्नत हथकरघा ।
3. उन्नत धागाकरण सह ऐंठन मशीन

ख. पेटेण्ट के लिए फाइल किया गया आवेदन :

1. उत्पाद 'रॉट फिक्स' पेटेन्ट के लिए आवेदन दिया गया है ।

ग. प्रौद्योगिकियाँ/वाणिज्यीकृत उत्पाद

1. कच्चा रेशम स्कीन के लपेटन निष्पादन में सुधार के लिए पूर्व-भाप तकनीक ।

(vi) सहयोगी अनुसंधान परियोजनाएं तथा जैवसामग्री अनुसंधान

1) केरेबो के अ व वि संस्थान, आंतरिक निधि प्राप्त परियोजनाओं के अलावा डीबीटी, डीएसटी, पीपीवी तथा एफआरए, लॉरियाल, आईएलआरआई, राँची आदि की वित्तीय सहायता के साथ सहयोगी अनुसंधान परियोजनाओं को भी संचालित कर रहे हैं । वर्ष 2017-18 के दौरान बाह्य निधियों के साथ कुल 14 अनुसंधान परियोजनाएं संचालित की जा रही है ।

2) केरेबो संस्थान, अन्य अनुसंधान संस्थानों जैसे आईआईटी, खरगपुर, आईएआरआई नई दिल्ली, सीसीएमबी हैदराबाद, आईआईएससी, बेंगलूरु, निफ्ट तिरुपुर, श्री चित्रा तिरुनाल इन्स्टीट्यूट फॉर मेडिकल सांइसेस एण्ड टेक्नालॉजी, त्रिवेन्द्रम, केरल, बीटीआरए मुंबई, कॉयर बोर्ड, जीकेवीके बेंगलूरु, आईसीएआर-एनबीएआईआर, बेंगलूरु, एनईआईएसटी जोरहाट, टीईआरआई बेंगलूरु, एनबीएमएस व एलयूपी, जोरहाट, बीआईटी मेसरा, एनसीएल पुणे आदि के साथ सहयोग भी करता है । वर्तमान में इन संस्थानों में से कुछ संस्थानों के सहयोग से 13 परियोजनाएं की जा रही है।

3) विभिन्न संस्थानों के साथ अन्तरराष्ट्रीय सहयोग भी लिया गया है । कोसोत्तर प्रौद्योगिकी पर प्रौद्योगिकी के विकास हेतु डेकिन विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया के साथ तीन परियोजनाएं तथा डीएनवी प्रतिरोधी रेशमकीट के विकास के उद्देश्य से दूसरी परियोजना जापान के साथ पहले ही प्रारंभ की गई है तथा नस्ल सुधार पर बुलगैरिया के साथ अन्य परियोजना भी संचालित की जा रही है ।

4) संकर ओज में सुधार लाने हेतु आनुवंशिक सामग्री के लेन-देन के लिए बुल्गेरिया**,** जापान**,** चीन व आस्ट्रेलिया के अनुसंधान संस्थानों के साथ समझौता करार किया गया ।

प्रशिक्षण

पूरे देश में व्याप्त केरेबो के अ व वि संस्थान सभी चारों रेशम उप-क्षेत्रों से संबंधित रेशम मूल्य-श्रृंखला की सभी गतिविधियों को आवृत्त करते हुए गहनता से प्रशिक्षण, कौशल रोपण तथा कौशल विकास आदि में निरंतर लगा हुआ है ।

वर्ष 2015-16 से केरेबो की क्षमता विकास तथा प्रशिक्षण पहल को निम्नलिखित पाँच शीर्षकों के अन्तर्गत पुन:संरचित किया गया है जिनका कार्यान्वयन तथा अनुश्रवण क्षमता विकास व प्रशिक्षण प्रभाग द्वारा किया जाना है:

(i) कौशल प्रशिक्षण व उद्यम विकास कार्यक्रम (**एसटीईपी**)

इस श्रेणी के अन्तर्गत उद्यमी विकास, आंतरिक तथा उद्योग संसाधन विकास, विशेष विदेशी प्रशिक्षण, रेशम उत्पादन प्रौद्योगिकी का प्रचार, प्रयोगशाला से क्षेत्र तक प्रौद्योगिकी प्रदर्शन कार्यक्रम, प्रशिक्षण प्रभाव मूल्यांकन सर्वेक्षण आदि पर ध्यान केन्द्रित करते हुए अनेक अल्पकालीन प्रशिक्षण मॉड्यूल प्रारम्भ करने की योजना है । इस घटक के अधीन के लोकप्रिय कार्यक्रम उदयम विकास कार्यक्रम, प्रौद्योगिकी उन्नयन कार्यक्रम, संसाधन विकास कार्यक्रम/प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रतियोगिता वर्धक प्रशिक्षण कार्यक्रम, आनुशासनिक प्रक्रिया प्रशिक्षण, प्रबंधन विकास कार्यक्रम आदि है ।

(ii) रेशम उत्पादन संसाधन केन्द्र (**एसआरसी**) **की स्थापना**

ये प्रशिक्षण सह-सुविधा केन्द्र चयनित शहतूत द्विवप्रज व वन्य क्लस्टरों में **₹** 3.50 लाख के इकाई मूल्य में स्थापित किया गया है जो अनुसंधान व विकास प्रयोगशालाओं के विस्तार केन्द्रों तथा लाभार्थियों के बीच महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करेगा । इन रेशम उत्पादन संसाधन केन्द्रों का उद्देश्य है - प्रौद्योगिकी प्रदर्शन ,कुशलता में वृद्धि , रेशम उत्पादन निवेश के लिए एक स्थान ,क्लस्टर स्तर पर ही संदेह का निवारण तथा समस्या का हल । आज की तारीख को 15 एसआरसी कार्यरत है ।

(iii) केरेबो के अनुसंधान व विकास संस्थानों द्वारा क्षमता विकास व प्रशिक्षण

संरचित दीर्घावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम **(**रेशम उत्पादन में स्नातकोतर डिप्लोमा**)** के अतिरिक्त केरेबो के अनुसंधान व विकास संस्थान, कृषि मेला, कृषक दिवस, कृषक अन्योन्यक्रिया कार्यशाला आदि के

अलावा कृषकों तथा अन्य पणधारियों को सशक्त बनाने के लिए प्रौद्योगिकी आधारित प्रशिक्षण भी आयोजित करेगा ।

(iv) बीज क्षेत्र में क्षमता विकास

रेशमकीट बीज सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो पूरी रेशम मूल्य श्रृंखला को आगे बढ़ाता है । बीज की गुणवत्ता से उद्योग की गुणवत्ता का परिणाम निर्धारित होता है । अत: इस क्षेत्र में क्षमता विकास तथा प्रशिक्षण की आवश्यकताएं बहुत ही महत्वपूर्ण हैं । उद्योग के पणधारी जैसे निजी रेशमकीट बीज उत्पादक, अभिगृहीत बीज कीटपालक, प्रबन्धक तथा सरकारी बीजागारों से संबद्ध कार्यदल को शामिल करने हेतु अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव है ।

(v) सूचनाए, शिक्षा एवं संचार (आईईसी)

विवरणिका, पत्रक, हैण्डआउट, पुस्तिका आदि के माध्यम से अनुशंसित प्रौद्योगिकियों को लोकप्रिय बनाते हुए क्षमता विकास एवं प्रशिक्षण पहल के लिए सूचना, शिक्षा तथा संचार होती है । यह घटक उद्योग के प्रदर्शन हेतु प्रौद्योगिकी आधारित अनुदेशात्मक वीडियों, अध्ययन सामग्री तथा डाक्यूमेन्ट्री फिल्म का निर्माण भी प्रस्तावित करता है । सितंबर, 2017 के दौरान प्रचार अनुभाग के माध्यम से हैण्डबुक ऑन सिल्क इंडस्ट्री इन इंडिया (इन्फो बुकलेट) की कुल 1500 प्रतियाँ छपवाई गई ।

वर्ष 2015-16 से 2017-18 (दिसंबर 2017 तक) के दौरान केरेबो के अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के अधीन प्रशिक्षित व्यक्तियों के विवरण नीचे तालिका में दी गई है :

#	प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	प्रशिक्षित व्यक्तियों की संख्या					
		2015-16		2016-17		2017-18	
		लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि (दिसंबर, 2017)
1	संरचित पाठ्यक्रम (पीजीडीएस,शहतूत व गैर-शहतूत पाठ्यक्रम)	100	85	100	111	265	118
2	कृषक कुशलता प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी अभिविन्यास कार्यक्रम, कैप्स्यूल व तदर्थ् पाठ्यक्रम तथा अध्ययन दौरा	8885	11798	9400	9034	8030	5258
3	अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम	1000	1194	4000	6628	4945	4640
4	एसटीईपी	895	909	1500	917	2030	1464
	कुल	**10880**	**13986**	**15000**	**16690**	**15270**	**11480**

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण:

समाप्त हुई परियोजनाओं से विकसित प्रौद्योगिकियों को विभिन्न विस्तार संचार कार्यक्रमों अर्थात् कृषि मेला, समूह चर्चा, प्रबोधन कार्यक्रम, क्षेत्र दिवस, कृषक सम्मिलन, दृश्य-श्रव्य कार्यक्रम, प्रौद्योगिकी प्रदर्शन, आदि के माध्यम से क्षेत्र में हस्तांतरित किया गया है । वर्ष 2017-18 के दौरान दिसंबर, 2017 के अंत तक कुल 1540 प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम आयोजित किए गए और 56 प्रौद्योगिकियों को कोसापूर्व क्षेत्र के अधीन उपयोगकर्ता के स्तर पर सफलतापूर्वक हस्तांतरित किया गया है । इसके अतिरिक्त, कोसोत्तर क्षेत्र में कुल 1306 क्षेत्र कार्यक्रम/प्रौद्योगिकी प्रदर्शन संचालित किया गया तथा 76,687 कोसा एवं रेशम नमूनों की परीक्षा की गई तथा परिणाम प्रदान किए गए ।

(i) द्विप्रज रेशम हेतु समूह संवर्धन कार्यक्रम का कार्यान्वयन :

12वीं योजना के दौरान देश में आयात प्रतिस्थानी रेशम के संवर्धन पर विशेष जोर दिया गया तथा द्विप्रज रेशम उत्पादन के 1985 मी.टन (2012-13) के उत्पादन स्तर को बढ़ाकर 5000 मी.टन तक लक्ष्य रखा गया । इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केन्द्रीय रेशम बोर्ड ने राज्य के रेशम उत्पादन विभागों के साथ मिलकर 172 द्विप्रज क्लस्टरों का आयोजन किया है ।

वर्ष 2016-17 के दौरान संयुक्त संकेन्द्रित प्रयासों के साथ 5260 मी टन लक्ष्य के सापेक्ष 5266 मी.टन द्विप्रज कच्चे रेशम का उत्पादन किया गया अर्थात् वर्ष 2015-16 के दौरान उत्पादित 4613 मी. टन के सापेक्ष 653 मी.टन (14.2%) और बढ़ गया । द्विप्रज समूहों का योगदान 3405 मीट अर्थात् 2016-17 के दौरान के कुल 5266 मी.टन के द्विप्रज कच्चा रेशम उत्पादन का 65.0 % रहा ।

वर्ष 2019-20 के अंत तक देश के 8500 मीट्रिक टन के द्विप्रज कच्चे रेशम उत्पादन लक्ष्य प्राप्ति के लिए ध्यान केंद्रित करते हुए 2017-18 से 2019-20 तक अगले तीन वर्षों के लिए समूह संवर्धन कार्यक्रम जारी रखा जा रहा है । विद्यमान कुछ समुहों की पुनसंरचना करते हुए कुल समूह लक्ष्य को प्रभावित किए बिना समूहों को 174 से कम कर 151 किया गया । वर्ष 2017-18 (अप्रैल-नवंबर 2017) के दौरान 6200 मी.टन द्विप्रज के कुल द्विप्रज कच्चे रेशम के लक्ष्य के सापेक्ष कुल द्विप्रज कच्चा रेशम उत्पादन 3689 मी.टन रहा । वर्ष 2017-18 के दौरान 151 क्लस्टरों से 4100 मी.टन द्विप्रज कच्चा रेशम का उत्पादन करने की उम्मीद है, जो 6100 मी.ट. के कुल उत्पादन लक्ष्य का लगभग 67% योगदान करता है । 151 क्लस्टरों के माध्यम से अगस्त 2017 के अंत तक द्विप्रज कच्चा रेशम का उत्पादन 1200 मी.टन रहा ।

(ii) वन्य रेशम के लिए समूह संवर्धन कार्यक्रम का कार्यान्वयन :

वन्य रेशम के लिए समूह संवर्धन कार्यक्रम (वीसीपीपी), केरेबो इकाइयों तथा संबंधित राज्य के रेशम निदेशालय के समन्वय से संयुक्त रूप से पुनर्गठित केन्द्र क्षेत्र योजना के अन्तर्गत आबंटित निधि का उपयोग करते हुए कार्यान्वित करना प्रस्तावित है । निदेशक, केतअवप्रसं, राँची तथा बुतरेबीसं, बिलासपुर को इन क्लस्टरों के कार्यान्वयन का अनुश्रवण कार्य संबंधित राज्य रेशम निदेशालय के समन्वय से सौंपा गया है । वर्तमान में तसर क्षेत्र में केन्द्र क्षेत्र योजना के अन्तर्गत विभिन्न तसर उत्पादक राज्यों में 22 क्लस्टर पहचाने गए हैं । बेंच मार्क सर्वेक्षण, नैदानिक अध्ययन पूरा किया गया है । कार्यान्वयन हेतु सीडीएफ तथा राज्य कर्मचारियों के लिए जागरूकता तथा क्षमता विकास पर कार्यशालाएं आयोजित की गई । कार्यक्रम के कार्यान्वयन हेतु विस्तृत दिशा निर्देश जारी किए गए और क्लस्टर स्तर, राज्य स्तर तथा संस्थान स्तर पर कार्यान्वयन में तेजी लाने तथा आवधिक रूप में कार्यक्रम की प्रगति की समीक्षा के लिए समिति गठित की गई है ।

प्रत्येक क्लस्टर के लिए 60 अपनाए गए बीज कीट पालकों तथा 15 निजी बीज उत्पादकों को सहायता प्रदान करना प्रस्तावित है, इसके साथ-साथ गुणवत्ता तसर बीज उत्पादन के समर्थन के लिए क्षमता विकास, क्षेत्र रोगाणुनाशन के लिए डोर-टू-डोर सेवा तथा मोबाइल परीक्षण एकक की सेवा प्रदान की गयी । कार्यक्रम के अन्तर्गत 1853 लाभार्थियों को सहायता प्रदान करने के लिए संबंधित राज्य सरकारों को ₹ 12.6 करोड़ की भारत सरकार की सहायता तथा लाथार्थियों के क्षमता विकास, अध्ययन दौरा, जागरूकता कार्यक्रम के लिए निदेशक, केतअवप्रसं, राँची तथा बुतरेबीसं, बिलासपुर को ₹ 74.474 लाख की निधि वन्य रेशम के लिए समूह संवर्धन कार्यक्रम के कार्यान्वयन के प्रति विमोचित की गई ।

उक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत, 1853 के कुल लक्ष्य के सापेक्ष क्षमता निर्माण, एक्सपोज़र विज़िट, डोर-टू-डोर सेवा आदि के अन्तर्गत 1625 लाभार्थियों को आवृत्त किया गया तथा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया । निष्पादन की समीक्षा दिनांक 22.07.2017 को केतअवप्रसं, राँची में संपन्न बैठक में की गई । वर्ष 2016-17 के दौरान बीज फसल (पहली फसल) में अपनाए गए कीट पालकों द्वारा 1.79 लाख रोमुबीच का कूर्चन किया गया तथा 54.71 लाख बीज कोसों का उत्पादन हुआ। इन बीजों कोसों का संसाधन 125 निजी बीज पालकों द्वारा किया गया तथा 5.25 लाख रोमुबीच का उत्पादन हुआ जिसमें से 4.71 लाख रोमुबीच का कीटपालन कृषकों द्वारा समूह में वाणिज्यिक फसल (द्वितीय फसल) में किया गया तथा वर्ष 2016-17 के दौरान 173.56 लाख कोसों का उत्पादन हुआ । वाणिज्यिक कीटपालन हेतु क्लस्टर के बाहर के कृषकों को शेष 0.88 लाख रोमुबीच की आपूर्ति की गई ।

वर्ष 2017-18 के दौरान बीज फसल (प्रथम फसल) में 972 अभिग्रहित बीज कीटपालकों द्वारा कुल 2.05 लाख रोमुच का कूर्चन कर 35 कोसे/रोमुच की दर से 72.31 लाख बीज कोसे उत्पादित किए गए । इन बीज कोसों का संसाधन 141 निजी बीज उत्पादकों द्वारा किया गया और 5.73 लाख रोमुच उत्पादित किए गए जिसमें से 5.60 लाख रोमुच का संवर्धन द्वितीय फसल (वाणिज्यिक) फसल में क्लस्टरों में 2235 वाणिज्यिक कृषकों द्वारा किया गया । क्षेत्र से कोसा फसल के विवरण की प्रतीक्षा है ।

(iii) जाइका के अन्तर्गत जापान समुद्रपारीय सहकारिता स्वयं सेवक (ज़ेओसीवी) :

केरेबो, जाइका के साथ मिलकर 1991 से भारत में द्विवप्रज रेशम के स्थायित्व के लिए कई कार्यक्रम चला रहा है । जाइका कार्यक्रमों के चरण-1 के अन्तर्गत केरेबो ने भारतीय दशाओं में प्रगुणन/प्रतिकृति के लिए उपयुक्त द्विवप्रज नस्लों, शहतूत की किस्मों तथा एक व्यापक द्विवप्रज रेशम उत्पादन प्रौद्योगिकी पैकेज विकसित की है। कार्यक्रम के द्वितीय चरण के दौरान इन प्रौद्योगिकियों का क्षेत्र परीक्षण किया गया और तीसरे चरण के दौरान एक व्यापक विस्तार प्रणाली विकसित की गई । इसे सीपीपी के माध्यम से भारत में प्रगुणन किया जा रहा है तथा 12वीं योजना के अंत तक 5000 मीट्रिक टन के लक्ष्य के सापेक्ष 5200 मी.टन द्विवप्रज रेशम का उत्पादन प्राप्त किया ।

इसके अलावा वर्ष 2012-14 के दौरान जाइका अनुवर्ती सहकारिता कार्यक्रम के अन्तर्गत जाइका ने गुणवत्ता के रखरखाव के लिए आधारभूत बीज के एक ही तरह के प्रगुणन के सख्त अनुपालन की सिफारिश की है ताकि प्रजाति लक्षणों का रखरखाव किया जा सके, साथ ही साथ गुणवत्तापूर्ण रेशमउत्पादन के लिए जाल संग्रहण तकनीक के साथ रोटरी चन्द्रिके प्रौद्योगिकी के सख्त इस्तेमाल की भी संस्तुति की है । कोसोत्तर क्षेत्र में जाइका की सहायता के साथ एक स्वचालित धागाकरण मशीन का विकास किया गया है तथा जाइका विशेषज्ञों की सहायता के साथ हरदा जल सूची बेध प्रणाली के माध्यम से सुधार लाने का प्रयास किया गया है ।

समूह अभिगम के अलावा, द्विवप्रज रेशम के सतत विकास के लिए किसानों के बीच ज्ञान/प्रौद्योगिकी हस्तांतरण करने के लिए सामुदायिक आधारभूत संगठनों (सीबीओ), स्व-सहायता समूह (एसजीएच) के प्रवर्तन के प्रयास किए गए हैं, यह मौजूदा विस्तार गतिविधियों, समूह कार्यकलापों, ऋण सुविधा, थ्रिफ्ट तथा बेहतर मूल्य प्रतिप्राप्ति के साथ-साथ है । हमारे प्रयासों को पूरा करने के लिए जाइका ने 10 समूहों (कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में 8 और 2 उत्तराखंड में) में केरेबो/डीओएस सीडीएफ के साथ मिलकर काम करने के लिए जेओसीवी कार्यक्रम के तहत 6 जापान प्रवासी सहयोगी स्वयंसेवकों (जेओसीवी) को नियुक्त करने का निर्णय लिया है । जेओसीवी का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र की समस्याओं की पहचान करने के लिए द्विवप्रज समूहों में केरेबो/राज्य प्रतिभागियों की सहायता करना है तथा चयनित समूहों में प्रभावी प्रौद्योगिकी हस्तांतरण हेतु रेशमविदों को सन्निहित करते हुए स्वयं सहायता समूहों/समुदाय आधारित

संगठनों के आयोजन में प्रसार प्रविधियों में भी सहायता करना है । तीन ज़ेओसीवी ने मार्च, 2017 में अपना कार्य पूरा कर लिया है और शीघ्र ही उनकी प्रतिस्थापना की उम्मीद है ।

सूचना प्रौद्योगिकी पहल

- **एम-किसान :** केरेबो ने कृषकों को उनके मोबाइल टेलीफोन से एम-किसान वेब पोर्टल के इस्तेमाल द्वारा वैज्ञानिक सुझावों को प्रदान करने हेतु सूचना-प्रसार के लिए वैज्ञानिकों तथा विशेषज्ञों की पहुंच को और विस्तृत किया है । आज की तारीख तक 33,02,000 संदेश भेजे गए हैं ।
- **'एसएमएस सेवा' :** कृषकों तथा उद्योग के अन्य पणधारियों के उपयोग के लिए रेशम तथा कोसों के दैनिक बाज़ार दर के संबंध में मोबाइल फोन के माध्यम से "एसएमएस सेवा" प्रचालित की गई है । दोनों पुश और पुल एसएमएस सेवा प्रचालन में है । दैनिक आधार पर सभी पंजीकृत **5140** कृषकों को एसएमएस संदेश प्राप्त हो रहे हैं ।
- **सिल्क पोर्टल :** उत्तर-पूर्व अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र, अंतरिक्ष विभाग के सहयोग से उपग्रह के माध्यम से छाया चित्रों को लेते हुए रेशम उत्पादन सूचना संपर्क एवं ज्ञान प्रणाली पोर्टल का विकास किया गया और रेशम उत्पादन गतिविधियों के लिए उपयोगी क्षेत्रों के चयन एवं विश्लेषण हेतु इनका प्रयोग किया जाता है । बहुभाषी, बहु जिला ऑकडा नियमित रूप से अद्यतन किया जा रहा है ।
- **सेरी-5के** पूरे देश के द्विप्रज क्लस्टर के कृषकों के रखरखाव एवं प्रबंधन के लिए सेरी-5के डेटाबेस तैयार कर इसे विकसित किया गया है ।
- **वीडियो कान्फ्रेंस :** केन्द्रीय रेशम बोर्ड में केरेबो कॉम्प्लेक्स, बेंगलूरु, केरेअवप्रसं, मैसूरु व बहरमपुर, केतअवप्रसं, राँची, केरेअवप्रसं, पाम्पोर, केमूएअवप्रसं, लाहदोईगढ़ तथा क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली में सुसज्जित वीडियो कान्फ्रेन्स सुविधा उपलब्ध है । 01 अप्रैल से 31 दिसंबर, 2017 तक 30 बहुस्थानीय वीडियो कान्फ्रेंसिंग आयोजित किए गए ।
- **केरेबो वेबसाइट :** केन्द्रीय रेशम बोर्ड की वेबसाइट "csb.gov.in" द्विभाषी रूप अर्थात् अंग्रेजी तथा हिन्दी में उपलब्ध है । इस पोर्टल के माध्यम से सामान्य नागरिकों के लिए, जिन्हें संगठन तथा इसकी योजनाओं एवं अन्य विवरण के बारे में जानना होता है, को अधिकाधिक जानकारी प्रसारित की जाती है । वेबसाइट में रेशम उत्पादन योजना कार्यक्रम, उपलब्धियाँ तथा सफल कहानियाँ विशेष रूप से दी गई हैं । केरेबो ने भारत सरकार की दिशा-निर्देशों के अनुसार अपनी वेबसाइट को जीआईजीडब्ल्यू अनुकूल तथा सुरक्षित बनाने की प्रक्रिया प्रारंभ की है ।
- **ऑनलाइन आवेदन पत्र :** केन्द्रीय रेशम बोर्ड विभिन्न पदों हेतु ऑनलाइन आवेदन पत्र स्वीकार करता है जिससे काम पाने के इच्छुक अभ्यर्थियों को आवेदन पत्र जमा करना सहज एवं सुगम होता है । इससे आवेदन पत्र की विभिन्न शर्तों को प्रभावी ढंग से निपटाया जाता है तथा समयानुसार प्रक्रिया पूरी होती है ।
- **एईबीएएस** : आधार सक्रिय बायोमैट्रिक उपस्थिति प्रणाली केन्द्रीय कार्यालय, बेंगलूरु में लागू की गई है । उपस्थिति पोर्टल में फार्म कामगार सहित 4596 से अधिक कर्मचारी पंजीकृत है । 176 इकाइयाँ में से 56 इकाईयों में एईबीएएस कार्यान्वित किया गया है जहाँ 5 अथवा इससे अधिक पदधारी कार्यरत हैं, आधार सक्रिय बायोमैट्रिक उपस्थिति प्रणाली कार्यान्वित की गई है । शेष इकाइयों में एईबीएएस उपस्कर खरीदने एवं कार्यान्वयन करने की प्रक्रिया में है ।
- **विंडोज आधारित लेखा सॉफ्टवेयर :** डीओएस आधारित एफएएस/पीआरएस पैकेज को सफलतापूर्वक विंडोज आधारित एफएएस/पीआरएस में अतिरिक्त अनुकूल गुणों के साथ परिवर्तित किया गया । केरेबो के सभी प्रत्यायोजित इकाईयों में इसका कार्यान्वयन प्रगति पर है ।

- **कृषकों तथा धागाकारों के लिए राष्ट्रीय डेटाबेस :** राष्ट्रीय स्तर पर कृषकों तथा धागाकारों के डेटाबेस के लिए कृषक एवं धागाकार डेटाबेस को तैयार कर इसे विकसित किया गया है, इससे प्रभावी निर्णय लेने में समुचित सूचना के साथ नीति निर्धारकों को मदद मिलेगी । डेटाबेस में राज्यों द्वारा दिसंबर, 2017 को यथाविद्यमान 5,30,395 कृषकों एवं 6779 धागाकारों के विवरण रिकार्ड किए गए हैं ।
- **"उत्तर पूर्वी राज्यों में गहन द्विवप्रज रेशम उत्पादन विकास परियोजना " ,एनईआरटीपीएस पर एमआईएस** : गहन द्विवप्रज रेशम उत्पादन के लिए एमआईएस विकसित कर सभी पणधारियों द्वारा समस्या रहित संपर्क के लिए इसे समर्पित सर्वर पर होस्ट किया गया है ।
- **शिकायत एवं वीआईपी संदर्भ** : शिकायत और वीआईपी संदर्भ के प्रबंधन के लिए डेटाबेस प्रोग्राम तैयार कर विकसित किया गया।
- **पेंशन रिकार्ड का डिजिटिलीकरण**: पेंशन कागजातों के डिजिटिलीकरण के लिए एक सॉफ्टवेयर तैयार कर विकसित किया गया। सुरक्षा और सुगम प्रबंधन के लिए सभी पेंशन अभिलेख डिजिटिलीकृत है ।
- **मोबाइल एप का विकास :** सौहार्द ओर उपयोगी तरीके में रेशम उत्पादन संबंधी विवरण व्यापक रूप में मोबाइल उपयोग करने वालों तक पहुँचाने के लिए मोबाइल एप तैयार करने की प्रक्रिया की शुरुआत की ।

2. बीज संगठन

केन्द्रीय रेशम बोर्ड के पास राज्यों को बुनियादी बीज की आपूर्ति करने वाले बुनियादी बीज फार्मों की एक श्रृंखला है । इसके वाणिज्यिक बीज उत्पादन केन्द्र कृषकों को वाणिज्यिक रेशमकीट बीज की आपूर्ति करने में राज्यों की मदद करते हैं ।

वर्ष 2015-16 से 2017-18 (दिसंबर 2017) के दौरान बीज उत्पादन की कुल मात्रा का परिमाण नीचे तालिका में दी गई है :

(इकाई: लाख रोमुच)

विवरण	2015-16		2016-17		2017-18	
	लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि (दिसंबर, 2017)
शहतूत	375.00	410.50	390.00	430.10	440.00	237.98
तसर	47.14	51.62	47.43	48.60	51.08	49.15
मूगा	7.26	7.45	8.13	6.87	8.07	5.57
एरी	4.52	5.75	5.5	4.78	6.00	5.91
कुल	**433.92**	**475.32**	**451.06**	**490.35**	**505.15**	**298.61**

3. समन्वय एवं बाजार विकास

केन्द्रीय रेशम बोर्ड के प्रशासन में बोर्ड सचिवालय, क्षेत्रीय कार्यालय, प्रमाणन केन्द्र तथा कच्चा माल बैंक शामिल हैं । केरेबो का बोर्ड सचिवालय विभिन्न योजनाओं के कार्यान्वयन का अनुश्रवण करता है तथा रेशम उत्पादन क्षेत्र की विभिन्न परियोजनाओं के कार्यान्वयन में मंत्रालय तथा राज्यों के साथ समन्वय करता है । बोर्ड सचिवालय अनेक राष्ट्रीय बैठकें, बोर्ड की बैठकें व पुनरीक्षण बैठकें तथा अन्य उच्च स्तरीय बैठकें आयोजित करता है । कच्चा माल बैंक प्राथमिक उत्पादकों को लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने हेतु कोसों के बाजार मूल्य के स्थायीकरण हेतु आधार मूल्य का प्रचालन करता है ।

तसर के लिए चाईबासा (झारखण्ड) में कच्चा माल बैंक (कमाबै), रायगढ़ (छत्तीसगढ़) ,भागलपुर (बिहार) , वारंगल (आंध्र प्रदेश) और भंडारा (महाराष्ट्र) स्थित प्रत्येक 4 उप-डिपो सहित ढ़ाकुआखाना ,सुआलकुची (असम) एवं कूचबिहार (प .बंगाल) स्थित 3 उप-डिपो सहित असम के शिवसागर स्थित मूगा कच्चा माल बैंक [मू क मा बैं] वास्तविक तसर व मूगा कोसा उत्पादकों को किफ़ायती और उचित मूल्य सुनिश्चित कराने के प्रारंभिक उद्देश्य से कार्य कर रहा है ।

पिछले तीन वर्ष 2015-16 से 2017-18 (दिसंबर, 2017) के दौरान कच्चा माल बैंक तथा मूगा कच्चा माल बैंक तथा इसके उप डिपो द्वारा किए गए कुल क्रय-विक्रय का ब्यौरा निम्नानुसार है :

(यूनिट : मात्रा लाख संख्या में एवं मूल्य रु .लाख में)

वर्ष	कमाबैं (तसर)				मूकमाबैं (मूगा)			
	क्रय		विक्रय		क्रय		विक्रय	
	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
2015-16	183.63	210.02	169.08	201.21	1.02	1.38	1.02	1.41
2016-17	200.76	287.10	171.68	229.88	1.55	2.77	1.55	2.92
2017-18 (दिसंबर-2017 तक)	125.31	129.99	100.03	155.64	1.50	2.20	1.50	2.31

उत्पाद अभिकल्प, विकास तथा विविधीकरण (पी3डी)

उत्पाद अभिकल्प विकास तथा विविधीकरण (पी3डी) के विभिन्न कार्यकलापों जैसे वस्त्र अभियंत्रिकी, रेशम मिश्रणों, नव वस्त्र संरचना का अभिकल्प, रेशम तथा रेशम मिश्रण में नए उत्पादों का अभिकल्प एवं विकास, समूहों में उत्पाद विकास, विकसित उत्पादों का वाणिज्यीकरण, अग्र-पश्च संपर्क प्रदान करने में वाणिज्यीकरण, प्रतिभागियों को सहयोग प्रदान करना, तकनीकी ध्यान तथा नमूना विकास में सहायता/समन्वय आदि पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया जाता है ।

पी3डी के कार्यकलाप

- पारंपरिक रेशम उत्पादों का पुनरुद्धार
- मिश्रणों के साथ उत्पादों की डिजाइन का विकास और विविधीकरण
- उनकी डिज़ाइन और अंतिम उपयोग दोनों के संदर्भ में कुछ विशिष्ट प्राथमिकताओं और आवश्यकताओं के आधार पर उत्पाद विकास
- बाजार की जानकारी का सृजन करना, बाजार के आंकड़ों को अद्यतन करना तथा फैशन प्रवृत्तियों का अनुमान करना
- रेशम एक्सपो/प्रदर्शनियों में विषय मंडप के अयोजन और उत्पादों के प्रदर्शन के जरिए भारतीय रेशम के जेनरिक तथा ब्रांड को बढ़ावा देना
- रेशम निर्माताओं और निर्यातकों को बाजार की मांग के अनुरूप नवीन डिजाइनों और कपड़ों के विकास में मदद करना
- रेशम उत्पादों में नवीनतम विकास का प्रदर्शन और अंत में भारतीय रेशम में नव-परिवर्तन हेतु उत्कृष्टता केंद्र बनाना

विकसित उत्पाद

1. विद्युत करघों पर मूगा साटिन वस्त्र तथा कपड़े

2. ब्लेजर तथा पोशाक हेतु एरी रेशम डेनिम वस्त्र, एरी तथा शहतूत बुनाई, एरी रेशम कंबल एवं कालीन तथा एरी रेशम गर्म कपड़े का पहनावा
3. दुल्हन के लिए विद्युत करघे पर तसर रेशम वस्त्र
4. चंदेरी क्लस्टर में शुद्ध रेशम साड़ी और कपड़े
5. डिजाइन में मूगा रेशम के साथ कांचीपुरम साड़ी
6. धब्बा सुरक्षा तथा सुगन्ध उपचारित साड़ियाँ
7. जीवन शैली वाले रेशम उत्पाद – महिला पर्स, थैला, मोज़ा, दस्ताना, अन्य उपस्कर
8. बाघ (एमपी) क्लस्टर में छपी रेशम साड़ी/वस्त्र
9. परंपरागत लैंबानी कला कार्य के साथ उत्पाद
10. बोम्काई डिजाइन के साथ शहतूती x एरी साड़ियाँ
11. नागालैण्ड आदिवासी आकृतियों के साथ शहतूत साड़ी तथा रेशम/लीनन, रेशम/कॉटन, रेशम/मोदल वस्त्र

4. गुणवत्ता प्रमाणन प्रणाली, निर्यात ब्राण्ड संवर्धन व प्रौद्योगिकी उन्नयन

गुणवत्ता प्रमाणन प्रणाली के मुख्य उद्देश्यों में एक है गुणवत्ता आश्वासन, गुणवत्ता मूल्यांकन और गुणवत्ता प्रमाणन को मजबूत करने के प्रति समुचित उपाय प्रारम्भ करना। योजना के अधीन, दो घटकों यथा "कोसा और कच्चा रेशम परीक्षण एकक" और "रेशम मार्क का संवर्धन", का कार्यान्वयन किया जा रहा है। कोसों की गुणवत्ता, धागाकरण के दौरान निष्पादन तथा उत्पादित कच्चे रेशम की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। उविका की सहायता से विभिन्न कोसा बाज़ारों में स्थापित कोसा परीक्षण केन्द्र, कोसों के परीक्षण को सुगम बनाता है। क्षेत्रीय कार्यालय से संबद्ध केंद्रीय रेशम बोर्ड के प्रमाणन केन्द्रों की श्रृंखला/नेटवर्क निर्यात के लिए तैयार रेशम माल के लदान-पूर्व स्वैच्छिक निरीक्षण करता है। यह भारत से निर्यात किये जाने वाले रेशम माल की गुणवत्ता सुनिश्चित करता है। केन्द्रीय रेशम बोर्ड भारतीय रेशम मार्क संगठन [भारेमासं] के माध्यम से रेशम उत्पादों की शुद्धता के लिए "रेशम मार्क" को लोकप्रिय बना रहा है । "रेशम मार्क", गुणवत्ता आश्वासन लेबुल है, जो शुद्ध रेशम के नाम से नकली रेशम उत्पादों की बिक्री करने वाले व्यापारियों से उपभोक्ताओं की हित की रक्षा करता है ।

11वीं योजना अवधि तथा पिछले तीन वर्ष 2015-16, 2016-17 तथा 2017-18 (अप्रैल, 2017 से दिसंबर 2017 तक) के दौरान रेशम मार्क योजना के अंतर्गत प्राप्त प्रगति निम्नानुसार है :

विवरण	2015-16		2016-17		2017-18	
	लक्ष्य	लक्ष्य	लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि (दिसंबर-17 तक)
पंजीकृत नए सदस्यों की कुल संख्या	250	272	250	250	250	219
बिक्री हुई रेशम मार्क लेबुल की कुल संख्या (लाख संख्या में)	25.00	27.00	25.00	25.53	27.50	19.042
जागरुकता कार्यक्रम/ प्रदर्शनी/मेला /कार्यशाला/रोड शो	390	410	410	622	450	408

(i) रेशम मार्क प्रदर्शनी

रेशम मार्क की विश्वसनीयता व इसका प्रचार सुनिश्चित करने हेतु देश में रेशम मार्क प्राधिकृत उपयोगकर्ताओं के लिए रेशम मार्क प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है । प्रदर्शनी न केवल रेशम मार्क के प्रचार के लिए आदर्श मंच है बल्कि शुद्ध रेशम उत्पादों के क्रय-विक्रय के लिए निर्माताओं तथा उपभोक्ताओं को एक मंच पर लाता है । इस कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों का काफी व्यापार होता है । इसके दौरान भारतीय रेशम मार्क संगठन द्वारा व्यापक जागरूकता तथा प्रचार कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं ।

वर्ष 2017-18 (अप्रैल, 2017 से दिसंबर, 2017 तक) के दौरान रेशम उत्पाद के मंद बाजार और प्राधिकृत प्रयोक्ताओं की खराब प्रतिक्रिया को ध्यान में रखते हुए भारतीय रेशम मार्क संगठन द्वारा एनईडीएफआई हाउस, हनुमान मंदिर के पास, गुवाहाटी तथा कलयवनार अंरगम, वालाजाह रोड़, चेन्नई तथा सत्य साई निगमागमम, हैदराबाद में केवल तीन रेशम मार्क प्रदर्शनी आयोजित किया गया । विवरण निम्नानुसार है:

#	**विवरण**	**05 से 11 अप्रैल, 2017 तक *7* दिन**	**15 से 19 सितंबर, *2017* तक 5 दिन**	**06 से 12 अक्टूबर, 2017 तक *7* दिन**	**02 से 09 दिसंबर, 2017 तक 8 दिन**	**संचयी**
	स्थान	गुवाहटी	गुवाहटी	चेन्नई	हैदराबाद	
1	स्टालों की संख्या	40	37	40	40	157
2	प्राधिकृत प्रयोक्ताओं की संख्या	40	37	37	40	154
3.	राज्यों की संख्या	6	8	13	11	13(अधि.)
4.	आगंतुकों की संख्या	1200	8000	3500	9500	22200
5.	व्यवसाय का कुल बिक्री	1.60 करोड़	1.00 करोड़	1.40 करोड़	3.20 करोड़	7.20 करोड़

(ii) ब्राण्ड संवर्धन व प्रौद्योगिकी उन्नयन

बारहवीं योजना के दौरान एक नया घटक " निर्यात/ब्रांड संवर्धन व प्रौद्योगिकी उन्नयन" वर्ष के लिए अपनाया गया था, जिसे भारेमासं/आईएसईपीसी द्वारा कार्यान्वित किया जाना है । हालांकि भारतीय रेशम ब्रांड संवर्धन की योजना सभी पणधारियों, निर्यातकों, आयातकर्ताओं, फ़ैशनडिज़ाइनरों आदि के साथ परस्पर चर्चा से केवल दो वर्षों यथा वर्ष 2013-14 और 2014-15 के लिए कार्यान्वित किया गया।

वर्ष 2015-16 के लिए प्रस्तुत योजना ज़ारी नहीं रखी गई और योजना की शेष अवधि के लिए योजना के कुछ घटकों को केन्द्रीय रेशम बोर्ड के विद्यमान गुणवत्ता प्रमाणन प्रणाली के साथ मिला दिया गया ।

इस अवधि के दौरान किए गए कुछ प्रचार गतिविधियां इस प्रकार हैं:

1. <u>शुद्ध रेशम डिजाइन प्रतियोगिता</u> :वन्य रेशम वस्त्रों का उपयोग करने के लिए नए पैटर्न विकसित करने हेतु स्थानीय डिजाइनरों के लाभ के लिए" शुद्ध रेशम डिजाइन प्रतियोगिता "की एक नई अवधारणा आयोजित की गई है। यह कार्यक्रम एनईडीएफआई हाउस, गुवाहाटी में आयोजित किया गया है और स्थानीय डिजाइनरों और बुटीक से अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त हुई । भारेमासं ने सबसे अच्छे डिज़ाइन किए गए वस्त्र के लिए पुरस्कार प्रदान किया है। भारेमासं ने रोड शो, फ्लायर, समाचार पत्रों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में विज्ञापन विज्ञप्ति, बिग एफएम रेडियो, फेस बुक, व्हाट्सएप आदि के माध्यम से व्यापक प्रचार किया है।

2. स्वच्छ भारत पखवाड़ा कार्यक्रम के अवसर पर, भारेमासं कॉरपोरेट कार्यालय और बेंगलुरू चैप्टर ने केरेबो जंक्शन के निकट 09.05.2017 को रोड शो आयोजित किया है। केन्द्रीय रेशम बोर्ड के 300 से अधिक अधिकारियों / कर्मचारियों एवं उनके परिवार सदस्यों ने रोड शो में 10.00 से 11.00 बजे तक , सक्रिय रूप से भाग लिया । रेशम मार्क टी-शर्ट पहनकर स्वयंसेवकों ने स्वच्छता अभियान के बारे में जागरुकता फैलाने के लिए सूचनात्मक संदेशों को लेकर प्लैकार्ड का प्रदर्शन किया। केरेबो जंक्शन से जुड़ने वाली पूरी सड़क के फुटपाथ पर खड़े स्वयंसेवक ने ट्रैफ़िक को परेशान किए बिना जनता को स्वच्छ भारत संदेश प्रसारित किया।

"कम करें, पुन:चक्रण और पुन :उपयोग" विषय पर कचरा प्रबंधन पर एक प्रदर्शनी केरेप्रौअसं ,कोरिडोर के पास आयोजित की गई है। 10 एजेंसियों/विक्रेताओं ने कचरे के उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर एक लाइव प्रदर्शन देते हुए प्रदर्शनी में भाग लिया और कचरे से धन विषय पर प्रकाश डाला। आम जनता और केरेबो के अधिकारियों ने प्रयासों की सराहना की।

3. वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार ने महात्मा मंदिर, गांधी नगर, गुजरात में 30 जून से 2 जुलाई 2017 तक एक मेगा इवेंट" टेक्स्टाइल्स इंडिया "2017 का आयोजन किया है। हॉल नंबर 2 में 140 वर्ग मीटर के स्टॉल की जगह में केंद्रीय रेशम बोर्ड को थीम मंडप स्थापित करने के लिए आवंटित किया गया है। भारेमासं ने इस महा शो का समन्वय किया है जिसमें शहतूत, एरी और मूगा रेशम कीट और कोसोत्तर गतिविधियों के प्रदर्शन के साथ-साथ कोसा पूर्व गतिविधियों का प्रदर्शन किया गया और नव विकसित रेशम उत्पादों का प्रदर्शन और नई खोज" बुनियाद "टसर रीलिंग मशीन का भी प्रदर्शन किया ।" सिल्क्स ऑफ़ इंडिया "नामक पवीलियन ने भारत और विदेश से आगंतुकों को आकर्षित किया। श्रीमती स्मृति जूबिन ईरानी, माननीय वस्त्र मंत्री ने विशेष रूप से थीम पवीलियन की समग्र प्रस्तुति और प्रदर्शन की सराहना की और अन्य विभागों के केंद्रीय मंत्रियों और मंत्रालय से शीर्ष अधिकारियों ने भी पवीलियन का वीक्षण कर इसकी सराहना की।

4. निर्यात बाजार का पता लगाने के लिए रेशम मार्क के सदस्यों को एक मंच बनाने के लिए, भरेमासं ने सब्सिडी वाले स्टॉल के किराए पर हॉल नंबर 9 में 9 वर्ग मीटर के 15 स्टाल प्रदान किए हैं। बेंगलूरु, कोचीन, वाराणसी, अहमदाबाद और मुंबई के 14 प्राधिकृत उपयोगकर्ताओं ने अपने विशेष उत्पादों का प्रदर्शन किया है और विभिन्न देशों के सिल्क आयातकों से अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त की है।

5. फ्लॉवर शो :भारेमासं, बैंगलोर चैप्टर ने जिला बागवानी विभाग, कर्नाटक सरकार द्वारा मैसूर दशहरा के अवसर पर कुप्पना पार्क, मैसूर में 21.09.2017 से 02.10.2017 तक आयोजित फ्लावर शो में भाग लिया है । फलावर शो में रेशम मार्क थीम को (आकार5 फूट X 5फूट) आकार के 2 तितलियों को सुंदर लाल और सफेद रंग के गुलाब के फूल और अस्परागस घास के साथ बनाया। शो का उद्घाटन डॉ .एच सी महादेवप्पा, माननीय लोनिवि मंत्री, कर्नाटक सरकार ने 21 सितंबर, 2017 को 5 बजे शाम को किया । 50000 से अधिक लोगों ने फलॉवर शो का वीक्षण किया और भारेमासं द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की।

6. श्रीमती सिल्क मार्क-कोच्चि: भारतीय रेशम मार्क संगठन, पालक्काड़ चैपटर द्वारा 08.10.2017 को रेना इवेंट हब, बेनरजी रोड, कोच्चि में श्रीमती सिल्क मार्क 2017 के ग्रैण्ड फिनाले का आयोजन किया । सौंदर्य स्पर्धा केरल की विवाहित महिलाओं के अपने सौंदर्य एवं कला के प्रदर्शन के लिए मंच प्रस्तुत करने के लिए था । ऑडिशन के लिए अच्छी प्रतिक्रिया मिली और ग्रैण्ड फिनाले के लिए 14 महिलाओं का चयन किया गया । अभिनेता, फैशन डिजाइनर, फैशन फोटोग्राफर, जेडी इन्स्टिट्युट ऑफ फैशन टेकेनॉलजी के प्रधानाचार्य तथा निदेशक, रेशम उत्पादन, बोडोलैंड ने श्रीमती सिल्क मार्क तथा दो रनर

अप का चयन किया । पुरस्कार वितरण डॉ. थॉमस चांडी, आईएफएस, प्रधान सचिव सह पीसीसीएफ, सिक्किम सरकार द्वारा किया गया ।

इस अवसर पर उत्तर-पूर्वी शुद्ध रेशम के पोशाक के शो की व्यवस्था प्रोफेशनल मॉडल के साथ उत्तर-पूर्व क्षेत्र के नए डिजाइनों को प्रोत्साहित करने के लिए किया गया । उत्तर-पूर्व राज्यों के 10 प्रख्यात डिजाइनरों ने शो में भाग लिया । इस शो के पहले केरेबो के वीएसएमपीसी/पी3डी कक्ष के समर्थन से वन्य रेशम उत्पादों के वाणिज्यिकरण पर संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया और 50 पणधारियों ने भाग लिया ।

7. श्रीमती सिल्कमार्क- हैदराबाद व मुंबई में शुरूआत

हैदराबाद चैपटर ने 28.10.2017 को वैजाक में श्रीमती सिल्क मार्क के तृतीय संस्करण का आयोजन किया । यह कार्यक्रम अंबिका सी ग्रीन हॉटल, बीच रोड, वैजाक में आयोजित किया गया जिसमें अनेक प्रतिभागियों ने भाग लिया । श्रीमती लक्ष्मी भारगवी, फिल्म निर्माता, श्रीमती संध्या फैशन डिजाइनर तथा अन्य ने इसमें भाग लिया ।

मुंबई चैपटर ने मुंबई में पहली बार श्रीमती सिल्क मार्क आयोजित करने के संबंध में प्रेस मीट आयोजित किया । यह घटना हॉटल सी प्रिन्सेस, मुंबई में 27.10.2017 को आयोजित किया गया जिसमें कई उच्च पदाधिकारियों ने भाग लिया । प्रेस मीट में 40 मीडिया व्यक्तियों, 20 डिजाइनरों तथा अनेक उभरते मॉडल ने भाग लिया । डिजिटल व प्रिंट मीडिया ने इस घटना का व्यापक कवरेज दिया ।

5. वित्तीय प्रगति

क. योजना व गैर योजना :

वर्ष 2015-16 से वर्ष 2017-18 (दिसंबर, 2017 तक) के दौरान केन्द्रीय रेशम बोर्ड का वर्ष-वार वित्तीय निष्पादन नीचे दी गई सारणी में अंकित है :

(रुपये करोड़ में)

बजट शीर्ष	2015-16		2016-17		2017-18 (दिसंबर-17 तक)	
	आबंटन	व्यय	आबंटन (सं आ.)	व्यय	आबंटन (अनुमोदित (ब आ.)	व्यय
प्रशासनिक व्यय	306.09	302.08	342.50	342.50	372.00	302.84
योजना परिव्यय	178.10	178.10	154.01	154.01	193.50	136.85
कुल	**484.19**	**480.18**	**496.51**	**496.51**	**565.50**	**439.69**

ख. योजना कार्यक्रम :

वर्ष 2015-16 से वर्ष 2017-18 (दिसंबर, 2017 तक) के दौरान केन्द्रीय रेशम बोर्ड की मुख्य योजनाओं तथा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के प्रति वित्तीय आबंटन तथा केरेबो द्वारा उपगत व्यय नीचे दिया गया हैं:

(करोड़ रु.)

#	केरेबो के कार्यक्रम	2015-16 व्यय	2016-17 व्यय.	2017-18 (दिसंबर-17 तक)	
				आबंटन (अनुमोदित ब आ.))	व्यय
1	अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण व सू.प्रौ. पहल	88.29	74.82		
2	बीज संगठन	52.79	34.83		
3	समन्वय व बाजार विकास (मा सं वि)	9.02	11.64		
4	गुणवत्ता प्रमाणन प्रणाली तथा निर्यात/ब्राण्ड संवर्धन व प्रौद्योगिकी उन्नयन	1.00	1.49		
	एससीएसपी	7.00	22.73		
	टीएसपी	20.00	8.50		
6	रेशम उद्योग के विकास हेतु समग्र योजना			193.50	136.85 (अनंतिम व्यय)
कुल योग		**178.10**	**154.01**	**193.50**	**136.85**

6. अन्य योजनाएं

क. अभिसरण प्रयास:

वस्त्र मंत्रालय, केन्द्रीय क्षेत्र योजना तथा उत्तर-पूर्व क्षेत्र वस्त्र संवर्धन योजना के रूप में रेशम उत्पादन क्षेत्र का समर्थन प्रदान कर रहा है । अभिसरण के माध्यम से अतिरिक्त निधि संगठित कर तथा भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों द्वारा कार्यान्वित की जा रही योजनाओं का लाभ उठाते हुए आगे प्रयास किए जा रहे हैं । राज्यों से प्राप्त अद्यतन रिपोर्टों के अनुसार वित्तीय वर्ष 2016-17 के दौरान राज्यों ने ₹ 937.34 करोड़ के प्रस्ताव प्रस्तुत किए हैं और ₹ 902.84 करोड़ की राशि के लिए मंजूरी प्राप्त की है और ₹ 521.64 करोड़ की निधि प्राप्त की है । वित्तीय वर्ष 2017-18 के दौरान राज्यों द्वारा ₹ 816.92 करोड़ के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत किए हैं और ₹ 705.32 करोड़ की राशि के लिए मंजूरी प्राप्त की है तथा दिसंबर 2017 तक ₹ 281.49 करोड़ की निधि प्राप्त की है ।

ख. महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना

बिहार तथा झारखण्ड में प्रतिस्थापना के लिए विशेष स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोज़गार योजना (एसजीएसवाई) के अन्तर्गत भवन निर्माण पर सफल नमूनों का विकास किया गया, केरेबो तथा ग्रामीण विकास मंत्रालय बहुराज्यीय अभियानों को लेने के विचार से आगे आया जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी उन्मूलन हेतु आंध्र प्रदेश सरकार/तेलंगाना (एसईआरपी), बिहार ग्रामीण जीविका संवर्धन सोसाइटी (बीआरएलपीएस), बिहार सरकार, प्रदान, बीएआईएफ तथा महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना (एमकेएसपी) कोवेल फाउन्डेशन-गैर इमारती वन उत्पादों (एनटीएफपी), राष्ट्रीय ग्रामीण जीविका मिशन (एनआरएलएम) का एक उपघटक आदि को संलग्न किया गया है । सात परियोजनाओं में 7 राज्यों के 23 जिलों से 36117 महिला किसान (26094 तसर क्षेत्र में) ₹ 71.60 करोड़ के परिव्यय के साथ ग्रामीण विकास मंत्रालय तथा केरेबो (75:25) के हिस्से से आवृत्त की गई । यह परियोजना 3503 हेक्टेयर तसर परपोषी पौध, 9468 प्राकृतिक तसर पौध का पुनर्जीवीकरण सुनिश्चित करती है जिसमें मूल बीज के 6.75 लाख रोमुबीच के उत्पादन, वाणिज्यिक बीज के 59.35 लाख रोमुबीच के उत्पादन की क्षमता एवं कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए 478 सीआरपी पोषक के अलावा 16.09 करोड़ के धागाकरण

कोसों की क्षमता होगी । झारखण्ड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ तथा महाराष्ट्र में बहुराज्य परियोजना मार्च, 2018 में समाप्त होनी थी, जिसके लिए पीआईए द्वारा मार्च 2019 तक विस्तार माँगी जा रही है । आंध्र प्रदेश में परियोजना पीआईए, एसईआरपी, आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा सितंबर, 2016 से समाप्त की गई है ।

वित्तीय प्रगति : ग्रामीण विकास मंत्रालय ने केरेबो को बहु-राज्य परियोजना के अन्तर्गत 29.34 करोड़ विमोचित किया है, जिसमें से ₹ 29.023 करोड़ परियोजना क्षेत्र के प्रभारियों को विमोचित किया गया, जिन्होंने ₹ 17.71 करोड़ (68.93%) उपभोग किया है । केरेबो ने एसईआरपी, आंध्र प्रदेश एवं बीआरएलपीएस सहित सभी परियोजना अधिकारियों को 15.95 करोड़ भी विमोचित किया है जिसमें से ₹ 12.12 करोड़ का उपभोग किया गया ।

भौतिक प्रगति : 828 छोटे ग्रामों, 693 राजस्व ग्रामों, 60 ब्लॉकों तथा परियोजना राज्य के 26 जिलों में कुल 31210 कृषकों (81.03% अजजा, 4.88% अजा तथा 14.12% अल्पसंख्यक) को आवृत्त किया गया । परियोजना के अन्तर्गत 2496 कृषकों द्वारा 1377.74 हेक्टेयर में खण्ड पौधारोपण किया गया । बुतरेबीसं तथा बुनियादी बीज उत्पादन एककों से खरीदे गए मूल बीज के 8.03 लाख रोमुबीच का कूर्चन 1570 बीज कृषकों द्वारा किया गया जिससे 28.73 बीज कोसा प्रति रोमुबीच की दर से 230.75 लाख बीज कोसों का उत्पादन हुआ । 55.23 बीज कोसा प्रति रोमुबीच की दर से 51.918 लाख बीज कोसों के उत्पादन के लिए 303 नाभिकीय बीज कीटपालकों ने नाभिकीय बीज के 1.125 लाख रोमुबीच का कूर्चन किया । 254 प्राइवेट बीज पालकों द्वारा 165.753 लाख बीज कोसों का संसाधन किया गया तथा 4.5:1 के अनुपात में कोसा:रोमुबीच की दर से 36.81 लाख वाणिज्यिक रोमुबीच का उत्पादन हुआ तथा 33 कोसा प्रति रोमुबीच की दर से 929.58 लाख धागाकरण कोसों के उत्पादन हेतु प्राइवेट बीजागारों से 11701 वाणिज्यिक कीटपालकों द्वारा 38.69 लाख रोमुच का कूर्चन किया गया ।

एन आर एल एम समर्थन संगठन (एन एस ओ) के रूप में केरेबो के समर्थन के साथ राज्य ग्रामीण जीविका मिशन द्वारा एम के एस पी के अधीन परियोजनाएँ ।

नई दिल्ली में 10.02.2017 को माननीय केन्द्र वस्त्र मंत्री द्वारा पणधारियों की सम्मिलन के दौरान लिए गए निर्णयों के अनुसार और केन्द्रीय रेशम बोर्ड, ग्रामीण वस्त्र मंत्रालय के राष्ट्रीय जीविका मिशन (एन आर एल एम) समर्थन संगठन (एन एस ओ) होने के नाते परियोजना निर्माण, कार्यान्वयन (तकनीकी नयाचार का डिजाइन, मूल्य के श्रृंखला अध्ययन, परियोजना दस्तावेजीकरण) तथा क्षमता निर्माण (एस आर एल एम) के जीविका संकर व्यक्तियों के लिए कृषि पर प्रशिक्षण, मापदण्ड, प्रदर्शन में राज्य ग्रामीण जीविका मिशन एस आर एल एम के लिए सहायता दिया जाएगा ।

महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना के अंतर्गत वार्षिक कार्य योजना पर विचार करने के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय के सशक्तीकरण समिति में केरेबो ने भी प्रतिनिधित्व किया । झारखंड, ओडिशा तथा पश्चिम बंगाल राज्यों से तसर आधारित मध्यस्थता 01.03.2017 को आयोजित की गई । पत्र सं के-11034/02/2017/एमकेएसपी/ईसी दिनांक 03.03.2017 के अनुसार रु .63.34 करोड के परिव्यय में 35220 महिला किसानों को शामिल करते हुए ये परियोजनाएँ अनुमोदिन की गई है । इसके अलावा तसर प्रस्तावों को अंतिम रूप देने के लिए केरेबो ने छत्तीसगढ़ तथा बिहार के एसआरएलएम को समर्थन दिया, जो ग्रामीण विकास मंत्रालय के विचाराधीन है । पहले ही अनुमोदित तथा विचाराधीन परियोजनाओं के विवरण नीचे प्रस्तुत है ।

(रु. लाख में)

राज्य	लाभार्थियों की संख्या	ग्रा.वि.मं. का हिस्सा	एसआरएलएम हिस्सा	कुल
झारखण्ड	25000	2792.835	1861.89	4654.725
ओडीशा	5220	513.57	342.38	855.95
पश्चिम बंगाल	5000	494.191	329.461	823.652
अनुमोदित	**35220**	**3800.596**	**2533.731**	**6334.327**
छत्तीसगढ़	10448	1118.504	745.669	1864.173
बिहार	3795	446.7304	297.8203	744.5506
विचाराधीन	**14243**	**1565.234**	**1043.489**	**2608.724**
कुल	**49463**	**5365.83**	**3577.22**	**8943.051**

केरेबो द्वारा कोसा क्षेत्र में सीएसएस योजनाओं के तहत समर्थन का विस्तार करने का भी प्रस्ताव है, क्योंकि कोसा बैंको के सृजन के लिए उपलब्ध प्रावधानों के अनुसार, प्रत्येक गतिविधि के लिए कोसे की खरीद के लिए धागाकारों को कार्यशील पूंजी, उत्पादक संस्थाएं विकल्प के साथ उन्हें उत्पादक कंपनी के तहत लाने के लिए, ब्लॉक स्तर के एसआरएलएम दलों द्वारा बेहतर अनुवीक्षण के लिए सहायता प्रदान करना, लाभार्थी हिस्से को पूरा करने के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय से वित्त पोषण आदि द्वारा एमकेएसपी परियोजनाओं के तहत संचालन सुनिश्चित किया जा सकता है ।

ग. अनुसूचित जाति उप-योजना (एससीएसपी)

वर्ष 2017-18 के दौरान राज्य के रेशम उत्पादन विभागों/अन्य कार्यान्वयन एजेन्सियों के समन्वय से एक परियोजना नामत: **"अनुसूचित जाति उप-योजना (एससीएसपी) के अन्तर्गत रेशमउत्पादन के माध्यम से अनुसूचित जाति के परिवारों का सशक्तीकरण"** लागू की जा रही है । अब तक(दिसंबर 2017 तक) इस परियोजना में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, जम्मू व कश्मीर, उत्तराखण्ड, ओडिशा, बिहार, तमिलनाडु एवं हिमांचल प्रदेश, राज्यों को रु. 23.00 करोड़ का कुल आबंटन के सापेक्ष रु. 20.11 करोड़ की राशि विमोचित की गई है । परियोजना में 2330 के सापेक्ष 1829 लाभार्थियों को शामिल किया गया है ।

घ. जनजातीय उप-योजना (टीएसपी)

वर्ष 2017-18 के दौरान राज्य के रेशम उत्पादन विभागों/अन्य कार्यान्वयन एजेन्सियों के समन्वय से एक परियोजना नामत: **"जनजाति उपयोजना (टीएसपी) के अन्तर्गत रेशम उत्पादन के माध्यम से अनुसूचित जनजाति के परिवारों का सशक्तीकरण"** लागू की गई । अब तक (दिसंबर 2017 तक) आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, उत्तराखंड, ओडिशा, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, जम्मू व कश्मीर, हिमाचल प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्यों को रु. 30.00 करोड़ के कुल आबंटन के सापेक्ष रु. 23.78 करोड़ विमोचित किया गया है । परियोजना में 11107 के सापेक्ष 8424 लाभर्थियों को शामिल किया गया है ।

ङ. उत्तरपूर्वी राज्यों में रेशम उत्पादन विकास

उत्तर-पूर्व क्षेत्र में वस्त्र सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा **"उत्तर-पूर्व क्षेत्र वस्त्र संवर्धन योजना"** नामक परियोजना आधारित कार्यनीति अनुमोदित की है । "उत्तर-पूर्व क्षेत्र वस्त्र संवर्धन योजना" के अंतर्गत दो व्यापक संवर्गों नामत: आईएसडीपी तथा आईबीएसडीपी के अंतर्गत रेशम उत्पादन सहित वस्त्र सेक्टर में विभिन्न परियोजनाएँ अनुमोदित की गई है । ये दो परियोजनाओं का लक्ष्य पौधारोपण से

वस्त्र उत्पादन तक उत्पादन श्रृंखला के प्रत्येक चरण में मूल्य जोड़ के साथ रेशम उत्पादन का समग्र विकास है ।

चालू परियोजनाएं

रेशम उत्पादन के लिए, सभी पूर्वोत्तर राज्यों में शहतूत, एरी और मूगा क्षेत्रों को शामिल करते हुए 24 परियोजनाओं को अनुमोदन दिया गया है । इन परियोजनाओं की कुल लागत 819.19 करोड़ रूपये है, जो 2014-15 से 2018-19 तक कार्यान्वयन के लिए 690.01 करोड़ रूपये के भारत सरकार के हिस्से के साथ है। इन परियोजनाओं के उद्देश्य रेशम कीटपालन और रेशम उत्पादन मूल्य श्रृंखला में संबद्ध गतिविधियों के लिए स्थानीय लोगों को आवश्यक अवसंरचना सृजन और कौशल प्रदान करने के लिए उपक्षे में व्यवहार्य वाणिज्यिक गतिविधि के रूप में रेशम उत्पादन स्थापित करना है। शहतूत, एरी और मूगा क्षेत्रों के अंतर्गत लगभग 31,010 एकड़ (वर्तमान में 18,331 एकड़ और नए - 12,679 एकड़) पौधारोपण का प्रस्ताव है। परियोजनाओं से परियोजना अवधि के दौरान 2,285 मीट्रिक टन कच्चे रेशम के अतिरिक्त उत्पादन और 46,0 9 4 परिवारों को शामिल करते हुए प्रति वर्ष 1,100 मी.ट. रेशम के उत्पादन की आशा है, जिससे 2,30,500 व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। इन परियोजनाओं को 17-12-2013 से लेकर 16-11-2016 तक आयोजित 10 पीएएमसी बैठकों में अनुमोदित किया गया है।

प्रगति: दिसंबर, 2017 तक, 29,905 लाभार्थियों को शामिल करते हुए शहतूत,एरी एवं मूगा के पर पोषी पौधारोपण के अधीन लगभग 29, 960 एकड़ (विद्यमान -18,331 एकड़ और नए -11,629 एकड़) को लाया गया और आईएसडीपी और आईबीएसडीपी के अधीन 1,600 मी.ट. कच्चे रेशम का उत्पादन किया गया। उपरोक्त परियोजनाओं के अधीन मंत्रालय द्वारा विमोचित 546.70 करोड़ रुपए के सापेक्ष, रु.343.10 करोड़ (63%) उपगत किया गया है।

एकीकृत रेशम उत्पादन विकास परियोजना (आईएसडीपी) के अधीन 8 उत्तर-पूर्वी राज्य अर्थात् असम, बीटीसी, अरुणाचल प्रदेश, मणीपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड और त्रिपुरा में कार्यान्वयन करने के लिए 582.42 करोड रुपये [भारत सरकार का हिस्सा 479.60 करोड़ रुपये] की लागत में 16 रेशम उत्पादन परियोजनाओं के लिए अनुमोदन दिया गया है । परियोजना 27,010 एकड़ शहतूत,एरी व मूगा पौधारोपण के लिए सहायता प्रदान करेगी (विद्यमान 17,650 एकड़ और नया 9,360 एकड़)। इसमें त्रिपुरा के लिए रेशम प्रिंटिंग व संसाधन इकाई, बीटीसी के लिए मृदा से रेशम और नागालैण्ड के लिए पीसीटी की स्थापना शामिल है । जबकि 15 परियोजनाएँ राज्यों द्वारा कार्यान्वयन करने के लिए है जो पहचान किए गए क्षेत्रों में किसानों/बीज कोसा उत्पादकों/धागाकारों/बुनकरों के स्तर में अवसंरचना की व्यवस्था करने के मदद सहित वर्तमान सुविधाओं को बढ़ाने के लिए राज्यों के प्रयासों को समेकित करने के लिए है, एक परियोजना केन्द्रीय रेशम बोर्ड के लिए बीज अवसंरचना की व्यवस्था करने के लिए है जिससे उत्तर-पूर्वी राज्यों को गुणवत्ता बीज उत्पादन एवं आपूर्ति की जा सके । उपरोक्त परियोजना के लिए दिसंबर 2017 तक मंत्रालय ने रु 362.78 करोड़ की राशि विमोचित की है, जिसके सापेक्ष रु 236.10 करोड(65%) का व्यय रिपोर्ट की गई है ।

गहन द्विप्रज रेशम उत्पादन विकास परियोजना (आईबीएसडीपी)-सभी उत्तर-पूर्वी राज्यों [मणिपुर को छोड़कर] के लिए वर्ष 2015-16 से 2017-18 तक 236.78 करोड़ रुपये [भारत सरकार का हिस्सा 210.41 करोड़ रुपये] की कुल लागत में गहन द्विप्रज रेशम उत्पादन विकास के कार्यान्वयन के लिए 8 परियोजनाओं के लिए अनुमोदन दिया गया है । इस परियोजना का लक्ष्य, भविष्य में आयात के एवज में अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता स्तर के द्विप्रज रेशम का उत्पादन करना है । परियोजना में प्रत्येक समूह में 2 ब्लॉकों में शहतूत पौधारोपण के अधीन 500 एकड़ शामिल करना परिकल्पित है जिसमें प्रत्येक राज्य से

बुनकर सहित करीब 1,100 महिला लाभार्थी शामिल होंगे । समग्र रूप से, इसका लक्ष्य 4,000 एकड के शहतूत पौधारोपण को शामिल करना है और उत्तर-पूर्वी राज्यों से लगभग 9,071 महिला लाभार्थी शामिल होगी। पौधारोपण विकास एवं अवसंरचना की व्यवस्था के लिए समर्थन की मध्यस्थता सहित सामाजिक संघटन और महिलाओं के समूह इस परियोजना के अभिन्न अंग है । वर्तमान में, ये परियोजनाएं संबंधित राज्यों में कार्यान्वयन के अधीन है। उपरोक्त परियोजना के लिए दिसंबर, 2017 तक मंत्रालय ने रु 181.92 करोड़ की राशि विमोचित की है, जिसके सापेक्ष रु 107.00 करोड़ (59%) की व्यय रिपोर्ट की है ।

उपक्षेवसंयो के परियोजना-वार तथा राज्य-वार विवरण नीचे तालिका में दिया गया है :

उ-पूक्षेवसंयो के अन्तर्गत आईएसडीपी तथा आईबीएसडीपी परियोजना का विवरण दर्शाने वाले विवरणी

I	**एकीकृत रेशम उत्पादन विकास परियोजना**							
#	**राज्य**	**कुल परियोजना लागत (रु.करोड़)**	**भारत सरकार हिस्सा (रु.करोड़)**	**अब तक भारत सरकार द्वारा विमोचन (करोड़ रु)**	**लाभार्थी (सं.)**		**परियोजना के दौरान उपज (मी.ट.)**	
					लक्ष्य	**उपलब्धि**	**लक्ष्य**	**उपलब्धि (अ) (नवंबर,2017 तक)**
1	असम	66.67	47.42	37.48	5,965	4,451	196	198
2	बीटीसी	34.92	24.68	22.62	3,356	2,344	171	203
3	बीटीसी (आईईडीपीबी)	11.41	10.61	4.19	654	142	60	18
4	बीटीसी(मृदा से रेशम)	51.61	49.37	9.41	3,526	750	245	59
5	अरुणाचल प्रदेश	18.42	18.42	17.50	1,805	1,392	79	23
6	मणिपुर (घाटी)	149.76	126.60	107.55	6,613	5,115	450	369
7	मणिपुर (पहाड़ी क्षेत्र)	30.39	24.67	13.01	2,169	985	68	40
8	मेघालय	30.16	21.91	19.57	2,856	1,421	162	162
9	मिज़ोरम	32.49	24.49	23.26	1,683	665	117	99
10	मिज़ोरम (आईएमएसडीपी)	13.52	12.83	10.13	833	204	16	1
11	नागालैण्ड	31.47	22.66	21.52	2,678	1,565	166	160
12	नागालैण्ड (आईईएसडीपी)	13.66	12.83	8.11	1,053	113	72	7
13	नागालैण्ड (पीसीटी)	8.57	8.48	2.69	400	400	कोसोत्तर व सूतोत्तर गतिविधियाँ	
14	त्रिपुरा	47.95	33.20	29.58	3,432	3,659	275	174
15	त्रिपुरा (छपाई)	3.71	3.71	3.16			1.50 लाख मीटर/वर्ष	
16	केरेबो के अधीन शहतूत व वन्य बीज अवसंरचना	37.71	37.71	32.99			30 लाख शहतूत & 3.70 लाख मूगा/एरी रोमुच/ वर्ष	
	कुल (I)	**582.42**	**479.60**	**362.78**	**37,023**	**23,206**	**2,076**	**1,512**

II	गहन द्विप्रज रेशम उत्पादन विकास परियोजना							
#	राज्य	कुल परियोजना लागत (रु.करोड़)	भारत सरकार हिस्सा (रु.करोड़)	अब तक भारत सरकार द्वारा विमोचन (करोड़ रु)	लाभार्थी (सं.)		परियोजना के दौरान उपज (मी.ट.)	
					लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि (अ) (नवंबर,2017 तक)
1	असम	29.55	26.28	17.11	1,144	744	29	18
2	बीटीसी	30.06	26.75	25.41	1,188	611	26	19
3	अरुणाचल प्रदेश	29.47	26.20	24.89	1,144	508	20	2
4	मेघालय	29.01	25.77	24.47	1,044	1,033	27	13
5	मिज़ोरम	30.15	26.88	25.54	1,169	1,100	26	7
6	नागालैण्ड	29.43	26.16	24.85	1,144	1,034	27	7
7	सिक्किम	29.68	26.43	15.00	1,094	655	27	6
8	त्रिपुरा	29.43	25.95	24.65	1,144	1,014	27	15
	कुल(II)	**236.78**	**210.41**	**181.92**	**9,071**	**6,699**	**209**	**88**
	आईईसी			**2.00**				
	कुल-योग (I+II)	**819.19**	**690.01**	**546.70**	**46,094**	**29,905**	**2,285**	**1,600**

अ:अनंतिम

विशेष पहल/कार्यक्रम

1. रेशम उत्पादन के अन्तर्गत यूनीफाइड पेमेन्ट इन्टरफेस (यूपीआई) जागरूकता कार्यक्रम

केन्द्रीय रेशम बोर्ड ने रेशम उद्योग के पणधारियों के मध्य डिजिटल पेमेण्ट को बढ़ावा देने के प्रति जनवरी, 2017 से मार्च, 2017 तक यूनीफाइट पेमेण्ट इन्टरफेस (यूपीआई) पर जागरूकता कैम्प के साथ रेशम उत्पादन पर विशेष जागरूकता कार्यक्रम संचालित किया । इसके अंतर्गत, 5426 कैम्प आयोजित किए गए, 272 बैंक खाता खोले गए तथा 13,00,000 व्यक्तियों के लक्ष्य के सापेक्ष 9,51,300 व्यक्तियों ने यूपीआई ऐप्स कार्यक्रम में भाग लिया/डाउनलोड किया ।

2. अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर केंद्रीय रेशम बोर्ड ने हथकरघा एवं हस्तशिल्प विभाग के सहयोग से दिल्ली, ओडिशा (क्योंझार), महाराष्ट्र (नागपुर), छत्तीसगढ़ (जांजगीर), झारखण्ड (राँची) तथा बिहार (भागलपुर) में महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन 8 मार्च, 2017 को किया । माननीय वस्त्र मंत्री श्रीमती स्मृति जुबिन इरानी ने भारत में जांघ धागाकरण (तसर रेशम के धागाकरण हेतु अल्पसंख्यक महिला उद्यमियों द्वारा किए जा रहे) के शोषित एवं अस्वास्थ्यकर प्रक्रिया को समाप्त करने के लिए एक राष्ट्रीय अभियान का शुभारंभ किया तथा जांध धागाकरण को प्रतिस्थापित करने के लिए केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा विकसित महिला अनुकूल "बुनियादी धागाकरण मशीन" का वितरण किया ।

3. स्वच्छ भारत मिशन

केन्द्रीय रेशम बोर्ड वर्ष 2017-18 के दौरान सीएसएस योजना "रेशम उद्योग के विकास के लिए एकीकृत योजना" के अधीन "स्वच्छ भारत अभियान", एक अलग शीर्ष बनाया है और चालू वित्तीय वर्ष के दौरान "स्वच्छ भारत अभियान" के अधीन के व्यय को पूरा करने के लिए रु. 50.00 लाख रखा गया है । प्रथम तिमाही के दौरान की प्रगति निम्नानुसार है ।

क. स्वच्छता पखवाड़ा का आचरण (1 मई से 15 मई, 2017)

केन्द्रीय रेशम बोर्ड और इसके 308 अधीनस्थ इकाइयों में 1 मई 2017 से 15 मई 2017 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया । 15 दिन की अवधि के दौरान केरेबो ने स्वच्छता पर शपथ, कार्यालय परिसर की सफाई, पौधों को लगाना, रोड शो, स्वच्छता पर भाषण एवं निबंध प्रतियोगिता, अवशिष्ट को अलग करना और प्रबंधन पर भाषण एवं अवशिष्ट से धन पर जागरूकता कैम्प, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरूकता आदि आयोजित किया । सभी कर्मचारियों को कागज का उपयोग अधिकतम कम करने के लिए ई-ऑफिस के प्रति प्रेरित किया गया । केरेबो ने स्वच्छता संबंधी संदेश का स्टैन्डी की व्यवस्था की । अधिकतम कार्यक्रम स्थानीय टी वी चैनल पर प्रसारित किया । इस कार्यक्रम की व्यापक कवरेज टीवी एवं मीडिया पर किया गया। उपलब्धियां http://sbm.gov.in/SwachhSamiksha/index.aspx में अपलोड किया गया है ।

ख. स्वच्छत पर रोड शो:

केन्द्रीय रेशम बोर्ड एवं इसके मुख्य संस्थानों ने स्वच्छता संबंधी जागरूकता पैदा करने के लिए बेंगलूरु, राँची, गुवाहाटी, मैसूरु में 09.05.2017 को रोड शो का आयोजन किया । दूसरों को स्वच्छता पर जागरूकता पैदा करने के लिए सभी प्रतिभागियों ने भिन्न-भिन्न प्लेकार्ड पकड़ा । स्वच्छता संबंधी पेम्पलेट भी वितरित किए गए । यह लोगों के बीच एक सकारात्म संदेश फैलाया । कार्यक्रम का प्रसारण डीडी चंदना चैनल में किया गया ।

ग. **जैव निम्नीकरण अवशिष्ट का पुनचक्रण और जैव उत्पादों के उपयोग पर प्रकाश डालते हुए स्वच्छता पर प्रदर्शनी**

केन्द्रीय रेशम बोर्ड ने 09.05.2017 को जैव निम्नीकरण अवशिष्ट का पुनचक्रण और जैव उत्पादों के उपयोग पर प्रकाश डालते हुए स्वच्छता पर एक प्रदर्शनी आयोजित की और यह आम जनता के लिए खुला था । रसोई अवशिष्ट को बायो गैस के रूप में बदलने, कंपोस्ट का उपयोग, पुनचक्रण, पुन उपयोग, जैव कृषि का उपयोग, धुलाई के लिए हेर्बल डिटेरजेन्ट्स का उपयोग आदि पर प्रकाश डालते हुए करीब 15 स्टाल लगाए गए । यह अधिकतम लोगों का ध्यान आकृष्ट
किया ।

घ. केरेबो अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा स्व्च्छ रेशम ग्राम को अपनाना:

केन्द्रीय रेशम बोर्ड ने अपने अनुसंधान व विकास संस्थानों के माध्यम से पाँच स्वच्छ रेशम ग्राम को गोद लिया जिसमें मैसूरु तालूक के गोपालपुरा, बहरमपुर के मल्लिकापुर गाँव, टिटाबार के बोरहोल्ला गांव, कोटा के भैसाझाल और राँची के बिलासपुर हुतुर शामिल है इसका उद्देश्य रेशम उत्पादन स्वास्थ्य का समग्र विकास और जैव कृषि का संवर्धन सुनिश्चित करना है । इसके

अलावा क्षेतअके, बारिपदा द्वारा एक जनजातीय गांव को भी अपनाया गया है और स्वास्थ्य संपत्ति के भाग के रूप में 500 टूथ ब्रश, पेस्ट और टंग क्लीनर वितरित किए गए ।

ङ. "स्वच्छता ही सेवा (एसएचएस) " 15 सितंबर 2017 से 2 अक्टूबर, 2017 तक:

केन्द्रीय रेशम बोर्ड और इसके अनुसंधान एवं विकास संस्थानों में कार्यरत सभी कर्मचारियों द्वारा बड़े पैमाने पर शपथ ग्रहण करके 15.09.2017 को उद्घाटन समारोह के साथ "स्वच्छता ही सेवा"(एसएचएस) अभियान केन्द्रीय रेशम बोर्ड मुख्यालय, अनुसंधान व विकास संस्थानों और उनके क्षेत्र इकाइयों में आयोजित किया गया । 15 दिनों के लंबे कार्यक्रम के दौरान, केरेबो ने स्वचछता पर प्रतिज्ञा, कार्यालय परिसर की सफाई, पौधों के रोपण, सड़क शो, अपशिष्ट अलगाव पर चर्चा, स्थानीय विधायक/नगर निगम को शामिल करते हुए सरकारी विद्यालयों में शौचालय निर्मल पर जागरूकता कार्यक्रम और कचरे से धन पर प्रबंधन और जागरुकता शिविर, स्वास्थ्य और स्वच्छता जागरूकता इत्यादि का आयोजन किया। क्षेत्रीय श्रमिकों सहित सभी कर्मचारियों को इस कार्यक्रम में शामिल किया गया और 02.10.2017 - गांधी जयंती दिवस को हमारे राष्ट्र पिता को श्रद्धांजलि के साथ-साथ स्वच्छ भारत अभियान के तीन वर्ष होने के अवसर पर अभियान समाप्त कर दिया गया ।

4. अम्बेडकर जयन्ती

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय ने 14 अप्रैल, 2017 को अम्बेडकर जयंती मनाई । डिजिटल पेमेण्ट को बढ़ावा देने के लिए सभी कर्मचारियों के लिए भीम अनुप्रयोग की स्थापना एवं इसके इस्तेमाल का प्रदर्शन किया गया । एचएमओटी द्वारा 14.04.2017 को "रेशम उत्पादन के माध्यम से अ जा परिवारों के सशक्तीकरण" पर एक वीडियो फिल्म का विमोचन किया ।

नीति पहल

1. आयात पर सीमा शुल्क:

वर्तमान में कच्चे रेशम और रेशम के कपड़े पर 10% की मूल सीमा शुल्क लगाई जाती है।

2. कच्चे रेशम और रेशम वस्त्रों पर पाटन रोधी शुल्क:

<u>कच्चे रेशम</u>: सस्ते आयात के विरूद्ध घरेलू रेशम उद्योग के हितों की रक्षा के लिए, महा निदेशक, पाटन रोधी व संबद्ध कार्य (डीजीएडी)द्वारा दिसंबर, 2015 के दौरान नियत शुल्क के रूप में 3 ए ग्रेड और नीचे के आयातित कच्चे रेशम की अवतरित मूल्य 1.85 यू एस डॉलर प्रति किग्रा के पाटन-रोधी शुल्क निर्धारित शुल्क के रूप में लगाई गई है, जो दिसंबर 2020 तक लागू होगा।

<u>रेशम वस्त्र:</u> 200-100 ग्राम/मीटर वजन रेंज के चीनी रेशम कपड़ों पर पाटन-रोधी शुल्क जिसमें संदर्भ मूल्य यूएस $ 2.08 - 7.59 / मीटर अंकित है, दिसंबर-2016 तक लागू था।

इसके अलावा, घरेलू बाजार में आयातित रेशम वस्त्रों (क्रेप, जोरजेट आदि) की कीमतों की तुलना करते हुए बुनकर संघों के साथ हुई चर्चा के बाद यह देखा गया कि दूसरी सनसेट समीक्षा के लिए कोई संभावना नहीं है। उपरोक्त परिस्थितियों और विभिन्न बुनकर संघों से एकत्रित राय के अनुसार, केरेबो को रेशम वस्त्रों के आयात और इसकी कीमतों पर घरेलू बाजार की स्थितियों का विश्लेषण करने की आवश्यकता है (पाटन-निरोधी शुल्क बंद होने के बाद कम से कम 6 महीने की अवधि के लिए)। इसके बाद घरेलू बाजार में आयातित रेशम वस्त्रों की कीमतों में कमी / प्रभाव, पडता है तो, संभाव्य पाटन को रोकने के लिए नया आवेदन/पेटीशन करने के लिए उचित निर्णय लिया जाएगा (संघों के साथ परामर्श कर) ।

ख. रेशम उद्योग की स्थिति :

रेशम अद्वितीय भव्यता, प्राकृतिक, उच्च अवशोषक, कम वज़न, मुलायम स्पर्श तथा टिकाऊ होने के कारण विश्व में सबसे रमणीय वस्त्र है और इन विशेष गुणों के कारण रेशम दुनिया भर में **"वस्त्रों की रानी"** के रूप में जाना जाता है । इसके अतिरिक्त, यह अधिक रोज़गार परक, कम पूँजी निवेश एवं लाभकारी उत्पादन की प्रकृति के कारण लाखों को आजीविका का अवसर प्रदान करता है । इसके ग्रामीण आधारित फार्म में और फार्म के बाहर के क्रियाकलापों एवं विशाल रोज़गार क्षमता के चलते उद्योग की प्रकृति ने भारतवर्ष जैसी बड़ी कृषि अर्थव्यवस्था के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए उपयुक्त अवसरों में उद्योग की तलाश हेतु योजना और नीति बनाने वालों का ध्यान आकर्षित किया है ।रेशम भारतवासियों के जीवन और संस्कृति से जुड़ा हुआ है । भारतवर्ष में रेशम उत्पादन का जटिल एवं समृद्ध इतिहास है तथा रेशम व्यापार 15वीं शताब्दी से ही किया जाने लगा था । रेशम उत्पादन उद्योग भारतवर्ष के ग्रामीण और अर्द्ध शहरी क्षेत्रों के लगभग 8.25 मिलियन लोगों को रोज़गार प्रदान करता है। इनमें महिलाओं सहित समाज के आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग के काफ़ी संख्या में कामगार हैं । भारतवर्ष के पारंपरिक और संस्कृतिबद्ध घरेलू बाज़ार एवं रेशम वस्त्रों की आश्चर्यजनक विविधता जो भौगोलिक विशिष्टता प्रतिबिम्बित करती है, ने रेशम उद्योग में अग्रणी स्थान हासिल करने में मदद किया है । भारतवर्ष को सभी पाँचों ज्ञात वाणिज्यिक रेशम अर्थात् शहतूती, उष्णकटिबंधीय तसर, ओक तसर, एरी और मूगा उत्पादन करने वाला एकमात्र देश होने की अद्वितीय विशिष्टता है, जिसमें मूगा अपने सुनहली पीली चमक सहित भारतवर्ष का अद्वितीय और विशेषाधिकार है ।

भारत विश्व में दूसरा सबसे बड़ा रेशम का उत्पादक देश है । उत्पादित रेशम की चार क़िस्मों में वर्ष 2016-17 में 30,348 मीटरी टन कुल कच्चे रेशम के उत्पादन में शहतूती 70.09% (21,273 मीटरी टन), तसर 10.77% (3,268 मीटरी टन), एरी 18.58% (5,637 मीटरी टन) एवं मूगा 0.56% (170 मीटरी टन) रहा ।

रेशम उत्पाद क्षेत्र का निष्पादन

विवरण	2015-16 उपलब्धि	2016-17		2017-18	
		लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि (अ) (नवं- 17 तक)
शहतूत पौधारोपण (**लाख हे.**)	*2.09*	*2.27*	*2.17*	2.41	2.32
कच्चा रेशम उत्पादन:					
शहतूत (द्विप्रज)	*4,613*	*5,260*	*5,266*	6200	3689
शहतूत (संकर नस्ल)	15,865	17,400	16,007	17276	10552
उप-कुल (शहतूत)	**20,478**	**22,660**	**21,273**	**23,476**	**14,241**
वन्य					
तसर	2,819	3,285	3,268	3450	1423
एरी	5,060	5,835	5,637	6675	4,172
मूगा	166	220	170	240	118
उप-कुल (वन्य)	**8,045**	**9,340**	**9,075**	**10,365**	**5,713**
महा योग	**28,523**	**32,000**	**30,348**	**33,840**	**19,954**

स्रोत: आंकड़े रेनिस से प्राप्त केरेबो (केंद्रीय कार्यालय) में समेकित अ: अंनतिम

वर्ष 2016-17 व 2017-18 के दौरान उत्पादन (नवंबर 2017 तक)

वर्ष 2016-17 के दौरान देश में कच्चे रेशम का कुल उत्पादन 30,348 मी.ट. रहा, जो पिछले वर्ष के दौरान प्राप्त उत्पादन की तुलना में 6.4% की वृद्धि दर्शाता है और यह वर्ष 2016-17 के लिए निर्धारित वार्षिक उत्पादन लक्ष्य के लगभग 94.8% है।

पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2016-17 के दौरान शहतूत रेशम उत्पादन 3.8% अधिक रहा । द्विवप्रज कच्चे रेशम उत्पादन वर्ष 2016-17 के दौरान 5,266 मी.ट. का रिकार्ड उत्पादन किया जो पिछले वर्ष की तुलना में 14.2% की वृद्धि हासिल की है। । इसी तरह, वन्या रेशम, जिसमें तसर, एरी और मूगा कच्चा रेशम शामिल है, 2015-16 के सापेक्ष 2016-17 के दौरान 12.8% वृद्धि हासिल की है।

वर्ष 2016-17 के दौरान शहतूताधीन क्षेत्र 3.9% तक बढ़ गया।

वर्ष 2013-14 से 2016-17 और वर्ष 2017-18 (नवंबर,2017 तक) के दौरान कच्चे रेशम का राज्यवार उत्पादन **अनुबंध-I** में दिया गया है ।

कच्चे रेशम का आयात

वर्ष 2014-15 से 2016-17 और वर्ष 2017-18 (नवंबर,2017 तक) के दौरान आयातित कच्चे रेशम और रेशम वस्त्रों की मात्रा और मूल्य नीचे दिए गए हैं :

वर्ष	मात्रा (मी.ट.)	मूल्य (रु.करोड़ में)
2014-15	3489	970.82
2015-16	3529	1006.16
2016-17	3795	1092.26
2017-18*	2669	835.90

स्रोत: डीजीसीआईएस, कोलकाता.

* अप्रैल-नवंबर 2017 की अवधि के लिए उल्लिखित ऑकडे है (अनंतिम)

निर्यात:

विश्व अर्थव्यवस्था में मंदी तथा पश्चिम देशों (पश्चिमी यूरोप एवं अमेरिका जो रेशम माल के प्रमुख उपभोक्ता हैं) में रेशम माल की कम मांग के कारण रेशम माल के निर्यात आय में कमी आयी। तथापि गैर परंपरागत/नए बाज़ार जैसे युएई, नाइजीरिया, सुडान, थायलैण्ड आदि में रेशम निर्यात बढ़ रहा है जो एक प्रोत्साहजनक संकेत है । निर्यात आय 2016-17 के दौरान रु. 2,093,42 करोड़ रही । वर्ष 2015-16 से 2016-17 और वर्ष 2017-18 (नवंबर,17 तक) के दौरान रेशम मालों का निर्यात मूल्य नीचे दिया गया है :

(रु. करोड़ में)

मद	2015-16	2016-17	2017-18 (अ) (अप्रैल 17 से नवंबर 17)
प्राकृतिक रेशाम सूत	30.31	15.33	3.23
रेशम वस्त्र	1280.60	1051.65	231.09
बने बनाए वस्त्र	1078.39	864.33	638.57
रेशम कालीन	16.88	63.78	7.25

रेशम अपशिष्ट	89.80	98.33	60.58
Total	**2495.98**	**2093.42**	**940.72**

स्रोत: एफटीएसआई एवं एमएसएफटीआई,डीजीसीआईएस,कोलकाता। अ.अनंतिम

टिपपणी: अतिम ऑकड़ा स्रोत से प्राप्त आईटीसी(एचएस) कोड विवरण पर आधारित है ।

रोज़गार सृजन

देश में रोज़गार सृजन वर्ष, 2015-16 के 8.25 मिलियन व्यक्तियों की तुलना में 3.15% की वृद्धि निर्दिष्ट करते हुए वर्ष, 2016-17 में 8.51 मिलियन व्यक्ति तक बढ़ गया है ।

****

अनुबंध-I

पिछले पांच वर्ष (2013-14 से 2017-18 के दौरान राज्यवार कच्चा रेशम उत्पादन

(मी.टन में)

#	राज्य	2013-14 उपलब्धियाँ.	2014-15		2015-16		2016-17		2017-18 (अ) (नवं.17तक)	
			लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि	लक्ष्य	उपलब्धि
1	कर्नाटक	8574	8850	9645	10000	9823	11000	9571	11120	5962
2	आंध्र प्रदेश	6912	6458	6485	5700	5086	5505	5970	6090	4466
3	तेलंगाना		87	101	150	116	150	119	160	56
4	तमिलनाडु	1120	1739	1602	1920	1898	2000	1914	2000	1307
5	केरल	4	6	7	9	11	10	11	12	6
6	महाराष्ट्र	122	378	221	250	274	285	259	328	184
7	उत्तर प्रदेश	188	152	236	257	256	280	269	300	147
8	मध्य प्रदेश	195	222	248	215	257	275	111	230	25
9	छत्तीसगढ़	391	301	234	253	263	290	361	405	401
10	पश्चिम बंगाल	2079	2417	2500	2567	2391	2706	2565	2590	1628
11	बिहार	52	74	53	65	67	84	77	85	9
12	झारखण्ड	2003	2197	1946	2210	2284	2624	2631	2744	990
13	ओडिशा	53	111	98	120	117	130	125	140	16
14	जम्मू व कश्मीर	136	217	138	135	127	170	145	180	132
15	हिमाचल प्रदेश	25	40	30	30	32	40	32	40	25
16	उत्तराखण्ड	22	37	29	30	30	38	34	44	19
17	हरियाणा	0.13	2	0.3	1	0.6	2	1	2	0.43
18	पंजाब	4	14	4	1	0.8	5	3	6	3
19	असम व बोडोलैण्ड	2766	2939	3222	3810	3325	4103	3811	4705	2723
20	अरूणाचल प्रदेश	15	38	12	40	37	48	45	58	46
21	मणिपुर	487	737	516	560	519	503	529	560	243
22	मेघालय	644	776	656	835	857	900	927	1070	986
23	मिज़ोरम	44	54	50	65	64	82	76	100	81
24	नागालैण्ड	606	599	619	715	631	690	678	770	450
25	सिक्किम	0.20	13	8	7	6	16	9	17	-
26	त्रिपुरा	40	43	48	56	52	65	75	85	48
कुल		**26,480**	**28,500**	**28,708**	**30,000**	**28,523**	**32,000**	**30,348**	**33,840**	**19,954**

(अ): अनंतिम